CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बृहदवकहडाचक्रम्

कीर्तिकान्तशर्मा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Box - 3

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

॥ श्रीः ॥

प्राथमिक-ज्यौतिषम्

अर्थात्

बृहद्दवकहडाचक्रम्

'हेमपुष्पिका' हिन्दीव्याख्योपेतम्

मङ्गलाचरणम्—

नायं नायं परां शक्तिं स्मारं स्मारं पितुर्गिरः,
बृहद्दवकहडाचक्रे करोमि हेमपुष्पिकाम् ।
टीकां साधुप्रदां मन्ये मन्ये छात्रहितावहाम्,
मुदा वक्ष्यति मन्दोऽपि छात्रो हि साधु साध्विति ॥

कालप्रकरणम्

काल का रूप—

लोकानामन्तकृत् कालः कालोऽन्यः कलनात्मकः ।
स द्विधा स्थूलसूक्ष्मत्वान्मूर्त्तश्चामूर्त्त उच्यते ॥ १ ॥

काल दो प्रकार के होते हैं—(१) प्राणियों का अन्त कारक अर्थात् अतन्त । (२) कलनात्मक अर्थात् गणनाशील । कलनात्मक काल भेद से दो प्रकार के होते हैं—(१) स्थूल तथा (२) सूक्ष्म । स्थूल को मूर्त और सूक्ष्म को अमूर्त कहा गया है । व्यवहार में स्थूल काल का ही प्रयोजन होता है । अतः यहाँ उसीको लिया जाता है ॥ १ ॥

दशगुर्वक्षरोच्चारः कालः प्राण उदीरितः ।
षड्भिः प्राणैर्विनाडीस्यात्तच्छष्ट्या नाडिका स्मृता ॥ २ ॥
नाडीषष्ट्या तु नाक्षत्रमहोरात्रं प्रकीर्तितम् ।
तत्त्रिंशताभवेन्मासः सावनोऽर्कोदयैस्तथा ॥ ३ ॥
ऐन्दवस्तिथिभिस्तद्वत्संक्रान्त्या सौर उच्यते ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अष्टादशनिमेषास्तु काष्ठास्त्रिंशत्तु ताः कलाः ।
तास्तु त्रिंशत्क्षणस्ते तु मुहूर्त्तो द्वादशास्त्रियाम् ॥५॥
ते तु त्रिंशदहोरात्रः पक्षस्ते दशपञ्च च ।
पक्षौ पूर्वापरौ शुक्लकृष्णौ मासस्तु तावुभौ ॥ ६ ॥
द्वौ द्वौ मार्गादिमासौ स्याद्दतुस्तैरयनं त्रिभिः ।
अयने द्वे गतिरुदग्दक्षिणार्कस्य वत्सरः ॥ ७ ॥

दश गुरु अक्षर के उच्चारण को एक प्राण, ६ प्राणों का एक पल, ६० पलों की एक घटी, २ घटी का एक मुहूर्त्त (क्षण), ३० मुहूर्त्त या ६० घटी का एक अहोरात्र, १५ अहोरात्र का एक पक्ष दो पक्षों का एक मास, २ मासों की एक ऋतु, ३ ऋतुओं का एक अयन, तथा दो अयनों का एक भचक्र (सूर्य आदि ग्रहों के १२ राशियों के भोगकाल) वर्ष होता है। ६० घटी का एक नाक्षत्र अहोरात्र तथा ३० नाक्षत्र अहोरात्रों का एक सावन मास होता है। ३० तिथियों का एक चान्द्रमास तथा संक्रान्ति से संक्रान्ति पर्यन्त एक सौर मास होता है ॥ २-४ ॥

१० गुरु अक्षरोच्चारण = १ प्राण
६ प्राण = १ पल
६० पल = १ घटी
२ घटी = १ क्षण
३० क्षण = १ अहोरात्र
१५ अहोरात्र = १ पक्ष
२ पक्ष = १ मास
२ मास = १ ऋतु
३ ऋतु = १ अयन
२ अयन = १ भचक्र वर्ष
६० घटी = १ नाक्षत्र अहोरात्र
३० नाक्षत्र अहोरात्र = १ सावन मास
३० तिथि = १ चान्द्रमास।

१८ निमेष (पलक) की एक काष्ठा, ३० काष्ठा की १ कला, ३० कला का एक क्षण, १२ क्षण का एक मुहूर्त्त, ३० मुहूर्त्त का एक अहोरात्र, १५ अहोरात्र का १ पक्ष, २ पक्ष (शुक्ल और कृष्ण) मिलकर १ मास, मार्ग शीष आदि दो २ महिनों की १ ऋतु, ३ ऋतुओं का १ अयन तथा दो अयनों (उत्तरायण तथा दक्षिणायन) का एक वर्ष होता है ॥ ३-७ ॥

१८ निमेष = १ काष्ठा
३० काष्ठा = १ कला
३० कला = १ क्षण
१२ क्षण = १ मुहूर्त्त
३० मुहूर्त्त = १ अहोरात्र
१५ अहोरात्र = १ पक्ष
२ पक्ष = १ मास
२ मास = १ ऋतु
३ ऋतु = १ अयन
२ अयन = १ वर्ष।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक मास या मलमास

द्वात्रिंशतद्भिर्गतैर्मासैर्दिनैः षोडशभिस्तथा ।
घटिकानां चतुष्केण पतत्येकोऽधिमासकः ॥ ८ ॥
यस्मिन् चान्द्रे न सङ्क्रान्तिःसोऽधिमासो निगद्यते ।
तत्र मंगलकार्याणि नैव कुर्यात् कदाचन ॥ ९ ॥

बत्तीस मास सोलह दिन चार घड़ी पर एक अधिमास होता है। जिस चान्द्र-मास में सूर्य की सङ्क्रान्ति नहीं होती वह अधिमास कहलाता है और इसमें शुभ-कार्य वर्ज्य है ॥ ८–९ ॥

विशेष—सौर वर्ष से चान्द्रवर्ष लगभग ११ दिन कम होता है, अतः तीन साल बाद एक अधिमास (११ × ३ = ३३) होता है अर्थात् एक चान्द्रमास को अधिक बढ़ाकर सौरवर्ष से उसका समन्वय किया जाता है। यथा—

सौरमास = ३०½ दिन अतः सौर वर्ष = ३६६ दिन
चान्द्रमास = २९½ दिन अतः चान्द्रवर्ष = ३५४ दिन
सौरवर्ष—चान्द्रवर्ष = १२ दिन (एक वर्ष में अन्तर)
अतः ३६६ सौर दिन × ५ वर्ष = १८३० दिन
तथा ३५४ चान्द्र दिन × ५ वर्ष = १७७० दिन + ६० दिन = १८३० दिन।

इस प्रकार ५ वर्ष अर्थात् १८३० दिनों में सौर तथा चान्द्रमान दोनों समान हो जाते हैं अतः प्राचीन काल में पांच चान्द्रवर्षों में दो अधिमास (६० दिन) बढ़ा कर अधिमास की संज्ञा दी जाती थी।

क्षयमास

यस्मिन्मासे द्विसंक्रान्तिः क्षयमासः स कथ्यते ।
तस्मिन् शुभानि कार्याणि यत्नतः परिवर्जयेत् ॥ १० ॥

सूर्य की दो संक्रान्ति जिस में हो वह क्षयमास कहलाता है। इसमें शुभकार्य नहीं करना चाहिये ॥ १० ॥

विशेष—उपरोक्त सौर और चान्द्रवर्ष के हिसाब से कभी २१९ वर्ष अन्यथा १४१ वर्ष के उपरान्त एक मास कम हो जाता है, उसे क्षयमास कहते हैं।

मासों के भेद—

दर्शावधिं मासमुशंति चान्द्रं सौरं तथा भास्करराशिभोगात् ।
त्रिंशद्दिनं सावनसंज्ञमार्यानाक्षत्रमिन्दोर्भगणभ्रमाच्च ॥११॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से अमावस्या पर्यन्त चान्द्रमास, सूर्य की एक संक्रान्ति से दूसरी संक्रान्ति पर्यन्त सौर मास, ३० दिन का सावन मास तथा अश्विनी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आदि २७ नक्षत्रों में जब चन्द्रमा भोग करता है, तो उसको नाक्षत्रमास कहते हैं ॥ ११ ॥

मासों के संज्ञाकरण में कारण—

पुष्ययुक्ता पौर्णमासी पौषी मासे तु यत्र सा।
नाम्ना स पौषो माघाद्याश्चैवमेकादशापरे ॥ १२ ॥
यस्मिन्मासे पौर्णमासी येन धिष्ण्येन संयुता।
तन्नक्षत्राह्वयोमासः पौर्णमासी तदाह्वया ॥ १३ ॥

जिस महिने में पौर्णमासी के दिन पुष्य नक्षत्र होता है, उसे पौष मास कहते हैं। इसी प्रकार मघा आदि से शेष मासों को जानना चाहिये। पौर्णमासी के दिन जो नक्षत्र हो उसी नक्षत्र के नाम से वह महिना होता है और उसी नाम से वह पौर्णमासी भी होती है। इस प्रकार चित्रा से चैत्र, विशाखा से वैशाख, ज्येष्ठा से ज्येष्ठ, पूर्वाषाढ़ा से आषाढ़, श्रवण से श्रावण, पूर्वभाद्रपदा से भाद्रपद, अश्विनी से आश्विन, कृत्तिका से कार्त्तिक, मृगशिर से मार्गशीर्ष, पुष्य से पौष, मघा से माघ तथा उत्तरा फाल्गुनी से फाल्गुन मास होते हैं ॥ १२-१३ ॥

मासों के नाम—

मासश्चैत्रोऽथ वैशाखो ज्येष्ठ आषाढसंज्ञकः।
ततस्तु श्रावणो भाद्रपदोऽथाश्विनसंज्ञकः ॥ १४ ॥
कार्त्तिको मार्गशीर्षश्च पौषो माघोऽथ फाल्गुनः ॥ १५ ॥

चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्त्तिक, मार्गशीर्ष, पौष, माघ और फाल्गुन ये बारह महिनों के नाम हैं ॥ १४-१५ ॥

ऋतु—

चैत्रादिद्विद्विमासाभ्यां वसन्ताद्यृतवश्च षट्।
मीनमेषगते सूर्ये वसन्तः परिकीर्त्तितः ॥ १६ ॥
वृषभे मिथुने ग्रीष्मो वर्षा कर्कटसिंहयोः।
कन्यायां च तुलायां च शरदृतुरुदाहृतः ॥ १७ ॥
हेमन्तो वृश्चिकद्वन्द्वे शिशिरो मृगकुम्भयोः ॥ १८ ॥

चैत्र आदि दो-दो महिनों में एक ऋतु होती है। इस प्रकार मीन तथा मेष में सूर्य के रहने पर वसन्त, वृष व मिथुन में सूर्य के रहने पर ग्रीष्म, कर्क व सिंह में सूर्य के रहने पर वर्षा, कन्या और तुला में सूर्य के रहने पर शरद्, वृश्चिक और धनु राशि में सूर्य के रहने पर हेमन्त तथा मकर व कुम्भ राशि में सूर्य के रहने पर शिशिर ऋतु होती है ॥ १६-१८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अयन—

मकराद्राशिषट्केऽर्के प्रोक्तं चैवोत्तरायणम् ।
षट्सु कर्कादितो ज्ञेयं दक्षिणं ह्ययनं रवेः ॥ १९ ॥

मकर राशि से ६ राशियों में सूर्य के रहने पर उत्तरायण तथा कर्क से ६ राशियों में रहने पर दक्षिणायन होता है ॥ १९ ॥

अयन में कृत्य—

गृहप्रवेशत्रिदशप्रतिष्ठाविवाहचौलव्रतबन्धपूर्वम् ।
सौम्यायने कर्म शुभं विधेयं यद्गर्हितं तत्खलु दक्षिणे च ॥२०॥

गृह-प्रवेश, देवमन्दिर की प्रतिष्ठा, विवाह, चूड़ाकर्म, व्रतबन्ध आदि शुभ कृत्य उत्तरायण में तथा निन्दित कृत्य दक्षिणायन में करना चाहिये ॥ २० ॥

विशेष—पुंसवन, सीमन्त, जातकर्म, नामकर्म, अन्न-प्राशन आदि आवश्यक संस्कार जिनके लिये समय व मास निश्चित हो, उसे दक्षिणायन में करने पर भी दोष नहीं होता ।

वार्हस्पत्यमान—

मध्यमगत्या भभोगेन गुरोर्गौरववत्सरः ॥ २१ ॥

मध्यम गति से बृहस्पति की एक राशि के भोग को संवत्सर कहते हैं ॥ २१ ॥

संवत्सरों के नाम—

प्रभवो विभवः शुक्लः प्रमोदोऽथ प्रजापतिः ।
अङ्गिरा श्रीमुखो भावो युवा धाता तथैव च ॥ २२ ॥
ईश्वरी बहुधान्यश्च प्रमाथी विक्रमो वृषः ।
चित्रभानुः सुभानुश्च तारणः पार्थिवोऽव्ययः ॥ २३ ॥
सर्वजित्सर्वधारी च विरोधी विकृतिः खरः ।
नन्दनो विजयश्चैव जयो मन्मथदुर्मुखौ ॥ २४ ॥
हेमलम्बी विलम्बी च विकारी शार्वरी प्लवः ।
शुभकृच्छोभनः क्रोधी विश्वावसुपराभवौ ॥ २५ ॥
प्लवङ्गः कीलकः सौम्यः साधारणो विरोधकृत् ।
परिधावी प्रमादी च आनन्दो राक्षसो नलः ॥ २६ ॥
पिङ्गलः कालयुक्तश्च सिद्धार्थी रौद्रदुर्मती ।
दुन्दुभी रुधिरोद्गारी रक्ताक्षः क्रोधनः क्षयः ॥ २७ ॥
षष्टिसंख्याः समाख्याता नामतुल्यफला इमे ॥ २८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रह्मविष्णुरुद्रविंशतिभेदेन क्रमेण सृष्टिस्थितिप्रलयानुरूप-फलमेतेषाम् ॥ २९ ॥

प्रभव, विभव, शुक्ल, प्रमोद, प्रजापति, अङ्गिरा, श्रीमुख, भाव, युवा, धाता, ईश्वर, बहुधान्य, प्रमाथी, विक्रम, विष, चित्रभानु सुभानु, तारण, पार्थिव, अव्यय, सर्वजित, सर्वधारी, विरोधी, विकृति, खर, नन्दन, विजय, जय, मन्मथ, दुर्मुख, हेमलम्बी, विलम्बी, विकारी, शार्वरी, प्लव, शुभकृत्, शोभन, क्रोधी, विश्वावसु, पराभव, प्लवङ्ग, कीलक, सौम्य, साधारण, विरोधकृत्, परिधावी, प्रमादी, आनन्द, राक्षस, नल, पिङ्गल, कालयुक्त, सिद्धार्थी, रौद्र, दुर्मति, दुन्दुभि, रुधिरोद्गारी, रक्ताक्ष, क्रोधन, और क्षय ये साठ सम्वत्सर अपने-अपने नाम के अनुसार फल देते हैं।

इनमें प्रथम २० सम्वत्सरों की ब्रह्म, द्वितीय २० सम्वत्सरों की विष्णु तथा तृतीय २० सम्वत्सरों की रुद्रविंशति संज्ञा होती है जो क्रम से सृष्टि, स्थिति तथा लय के समान फल देनेवाली होती हैं ॥ २२–२९ ॥

इति हेमपुष्पिका भाषाटीकायां कालप्रकरणाख्यः प्रथमः ॥

पञ्चाङ्गप्रकरणम्

तिथिवारं च नक्षत्रं योगः करणमेव च ॥ १ ॥

ज्योतिष के तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण ये पांच प्रमुख अङ्ग होते हैं ॥ १ ॥

तिथिप्रकरणम्

तिथियों के नाम—

प्रतिपच्चद्वितीया च तृतीयातदनन्तरम् ।
चतुर्थी पञ्चमी षष्ठी सप्तमी चाष्टमी तथा ॥ २ ॥
नवमी दशमी चैवैकादशी द्वादशी ततः ।
त्रयोदशी ततो ज्ञेया ततः प्रोक्ता चतुर्दशी ॥ ३ ॥
पौर्णिमा शुक्लपक्षे तु कृष्णपक्षे त्वमा स्मृता ॥ ४ ॥

प्रतिपद्, द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पञ्चमी, षष्ठी, सप्तमी, अष्टमी, नवमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, त्रयोदशी, चतुर्दशी, शुक्लपक्ष में पूर्णिमा तथा कृष्णपक्ष में अमावस्या ये तिथियों के नाम हैं ॥ २–४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तिथियों के स्वामी—

तिथीशावह्निको गौरी गणेशोऽहिर्गुहोरविः ।
शिवो दुर्गान्तको विश्वे हरिः कामः शिवः शशी ॥ ५ ॥
अमायाः पितरः स्मृताः ॥ ६ ॥

प्रतिपदादि तिथियों के क्रम से अग्नि, ब्रह्मा, गौरी, गणेश, शेषनाग, कार्त्तिकेय, सूर्य, शिव, दुर्गा, काल, विश्वेदेवा, विष्णु, काम, शिव, चन्द्र तथा पितर स्वामी होते हैं ॥ ५-६ ॥

तिथियों के वृद्धिक्षय—

स्युस्तिस्रस्तिथयो वारे एकस्मिन्नऽवमी तिथिः ।
तिथिर्वारत्रयं चैका त्रिद्युस्पृग्द्वेऽतिनिन्दिते ॥ ७ ॥
कृतं यन्मङ्गलं तत्र त्रिद्युग्स्पृगवमे दिने ।
भस्मी भवति तल्लिप्तमग्नौ सम्यग्यथेन्धनम् ॥ ८ ॥

यदि एक वार (दिन) में तीन तिथियाँ स्पर्श करें, तो उसे अवम तथा तीन वारों में एक तिथि स्पर्श करे तो उसे वृद्धिगत तिथि कहते हैं। उक्त दोनों प्रकार की तिथियाँ अतिनिन्दित हैं तथा इनमें किया गया मङ्गलादि कार्य अग्नि में लकड़ी आदि के समान भस्म हो जाते हैं ॥ ७-८ ॥

तिथियों की नन्दादि संज्ञा तथा सिद्धा तिथि—

नन्दा च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्णेति तिथ्योऽशुभमध्यशस्ताः ।
सितेऽसिते शस्तसमाधमाः स्युः सितज्ञभौमार्किगुरौ च सिद्धाः ॥९॥

प्रतिपदादि तिथियों के क्रम से नन्दा, भद्रा, जया, रिक्ता और पूर्णा ये नाम होते हैं, जैसे प्रतिपदा का नन्दा, द्वितीया का भद्रा, तृतीया का जया, चतुर्थी का रिक्ता, पञ्चमी का पूर्णा, षष्ठी का नन्दा, सप्तमी का भद्रा, अष्टमी का जया, नवमी का रिक्ता, दशमी का पूर्णा, एकादशी का नन्दा, द्वादशी का भद्रा, त्रयोदशी का जया, चतुर्दशी का रिक्ता तथा पूर्णिमा एवं अमावस्या का पूर्णा। ये तिथियाँ शुक्लपक्ष में अधम, मध्यम और उत्तम तथा कृष्णपक्ष में इसके विपरीत अर्थात् उत्तम, मध्यम और अधम फल देने वाली होती हैं। नन्दा आदि तिथियों में क्रम से शुक्र, बुध, मङ्गल, शनि और गुरुवार के होने पर ये सिद्ध तिथि संज्ञक तथा सब दोषों को नाश करने वाली होती हैं ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पष्टार्थ चक्र—

संज्ञा	तिथि	तिथि	तिथि	सिद्धा तिथि
नन्दा	प्रतिपद्	षष्ठी	एकादशी	शुक्र
भद्रा	द्वितीया	सप्तमी	द्वादशी	बुध
जया	तृतीया	अष्टमी	त्रयोदशी	मङ्गल
रिक्ता	चतुर्थी	नवमी	चतुर्दशी	शनि
पूर्णा	पञ्चमी	दशमी	पूर्णिमा, अमावा०	गुरु
शुक्लपक्ष	अधम	मध्यम	उत्तम	शुभद
कृष्णपक्ष	उत्तम	मध्यम	अधम	शुभद

तिथियों के फल—

प्रतिपत्सिद्धिदा प्रोक्ता द्वितीया कार्यसाधिनी।
तृतीयारोग्यदात्री च हानिदा च चतुर्थिका ॥ १० ॥
शुभा तु पञ्चमी ज्ञेया षष्ठिकात्वशुभामता।
सप्तमी तु शुभा ज्ञेया अष्टमी व्याधिनाशिनी ॥ ११ ॥
मृत्युदात्री तु नवमी द्रव्यदा दशमी तथा।
एकादशी तु शुभदा द्वादशी सर्वसिद्धिदा ॥ १२ ॥
त्रयोदशी सर्वसिद्धा ज्ञेया चोग्रा चतुर्दशी।
पुष्टिदा पूर्णिमा ज्ञेया त्वमावास्याऽशुभा मता ॥ १३ ॥

प्रतिपद सिद्धिदात्री, द्वितीया कार्य सिद्धि करने वाली, तृतीया आरोग्यदात्री, चतुर्थी हानि देने वाली, पञ्चमी शुभदात्री, षष्ठी अशुभदात्री, सप्तमी शुभद, अष्टमी रोग नाश करने वाली, नवमी मृत्यु देने वाली, दशमी धनदात्री, एकादशी, शुभदात्री, द्वादशी एवं त्रयोदशी सब प्रकार की शुभ देने वाली, चतुर्दशी उग्र फल देने वाली, पूर्णिमा पुष्टिदात्री और अमावश्या अशुभ फल देने वाली होती है ॥ १०-१३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नन्दा आदि तिथियों के कृत्य—

नन्दासु चित्रोत्सववास्तुतन्त्रक्षेत्रादि कुर्वीत तथैव नृत्यम् ।
विवाहभूषाशकटाध्वयाने भद्रासु कार्याण्यपि पौष्टिकानि ॥ १४ ॥
जयासु संग्रामबलोपयोगि कार्याणि सिद्ध्यन्त्यपि निर्मितानि ।
रिक्तासु विद्वद्वधघातसिद्धिर्विषादिशस्त्रादि च यान्ति सिद्धिम् ॥१५॥
पूर्णासु माङ्गल्यविवाहयात्रा सुपौष्टिकं शान्तिककर्म कार्यम् ।
सदैव दर्शे पितृकर्मयुक्तं नान्यद्विदध्याच्छुभमङ्गलानि ॥ १६ ॥

चित्र, उत्सव, गृह, तन्त्र, क्षेत्र आदि सम्बन्धी कार्य नन्दा में, विवाह, आभूषण, शकट, यात्रा और पौष्टिक सम्बन्धी कार्य भद्रा में; संग्राम, बल आदि सम्बन्धी कार्य भद्रा में; शास्त्र, घात, विष और शस्त्र आदि सम्बन्धी कार्य रिक्ता में तथा माङ्गलिक, विवाह, यात्रा, शान्ति और पौष्टिक सम्बन्धी कार्य पूर्णा तिथियों में करना शुभकारक होता है। अमावास्या के दिन पितृकर्म के अतिरिक्त अन्य माङ्गलिक कार्य नहीं करना चाहिये ॥ १४–१६ ॥

पक्षरन्ध्र तिथियां—

चतुर्दशी चतुर्थी च अष्टमी नवमी तथा ।
षष्ठी च द्वादशी चैव पक्षरन्ध्राह्वया इमाः ॥ १७ ॥

चतुर्दशी, चतुर्थी, अष्टमी, नवमी, षष्ठी तथा द्वादशी इन तिथियों को पक्षरन्ध्र तिथि कहते हैं ॥ १७ ॥

पक्षरन्ध्र तिथियों में वर्जितकृत्य—

विवाहे विधवा नारी, व्रात्यः स्याच्चोपनायने ।
सीमन्ते गर्भनाशः स्यात्प्राशने मरणं ध्रुवम् ॥ १८ ॥
अग्निना दह्यते क्षिप्रं गृहारम्भे विशेषतः ।
राजराष्ट्रविनाशः स्यात्प्रतिष्ठायां विशेषतः ॥ १९ ॥

उक्त पक्षरन्ध्र तिथियों में विवाह करने से वैधव्य, उपनयन करने से व्रात्य (संस्कारहीन), सीमन्त करने से गर्भनाश, अन्नप्राशन करने से मृत्यु, गृहारम्भ करने से गृह का नाश तथा मन्दिर की प्रतिष्ठा करने से राजा और प्रजा का नाश होता है ॥ १८–१९ ॥

मासदग्धतिथि—

चापे मीने द्वितीया च चतुर्थी वृषकुम्भयोः ।
षष्ठी मेषे कुलीराख्ये कन्यायुग्मे तथाऽष्टमी ॥ २० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दशमी वृश्चिके सिंहे द्वादशी मकरे तुले।
एतास्तु तिथयो दग्धाः शुभे कर्मणि वर्जिताः ॥ २१ ॥

सूर्य के मीन और धनु में रहने से द्वितीया, वृष और कुम्भ में रहने से चतुर्थी, मेष और कर्क में रहने से षष्ठी, कन्या और मिथुन में रहने से अष्टमी, वृश्चिक और सिंह में रहने से दशमी तथा मकर और तुला में रहने से द्वादशी तिथियाँ मास दग्ध संज्ञक होती हैं। इनमें शुभकार्य नहीं करना चाहिये ॥ २०–२१ ॥

दग्ध तिथि—

द्वादशी रविवारे च सौमे चैकादशी तथा।
भौमे तथैव दशमी तृतीया बुधवासरे ॥ २२ ॥
षष्ठी गुरौ तथा शुक्रे द्वितीया सप्तमी शनौ।
दग्धयोगाः बुधैः प्रोक्ताः सर्वकार्याणि वर्जिताः ॥ २३ ॥

रविवार को द्वादशी, सोमवार को एकादशी, मङ्गल को दशमी, बुधवार को तृतीया, गुरुवार को षष्ठी, शुक्रवार को द्वितीया और शनिवार को सप्तमी तिथि दग्ध संज्ञक होती है। इन दग्ध तिथियों में शुभकार्य नहीं करना चाहिये २२–२३

प्रतिपद् आदि तिथियों में वर्ज्य—

त्यजेत्प्रतिपदाद्यासु कूष्माण्डं वृहतीफलम्।
लवणं मूलकं चैवं पनसं तैलसेवनम् ॥ २४ ॥
धात्रीफलं नारिकेलं फलं तुम्ब्याः पटोलकम्।
निष्पावान्नं मसूरांश्च वृन्ताकं माक्षिकं क्रमात् ॥ २५ ॥
अमायां सुरतं चैव पौर्णमास्यां दुरोदरम् ॥ २६ ॥

प्रतिपद में कूष्माण्ड, द्वितीया में बैंगन (बनभण्टा), तृतीया में लवण, चतुर्थी में मूली, पञ्चमी में कटहल, षष्ठी में तैलसेवन, सप्तमी में आंवला, अष्टमी में नारियल, नवमी में लौकी, दशमी में परवल, एकादशी में पका अन्न, द्वादशी में मसूर, त्रयोदशी में वृन्ताक (फल विशेष), चतुर्दशी में मधु, अमावस्या में स्त्री-प्रसंग और पूर्णिमा में ज्वार, बाजरे आदि का सेवन नहीं करना चाहिये ॥ २४–२६ ॥

इति हेमपुष्पिका भाषाटीकायां तिथिप्रकरणाख्यो द्वितीयः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वारप्रकरणम्

रविवारादि के नाम

आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुधश्चाथ बृहस्पतिः ।
शुक्रः शनैश्चरश्चैव वाराः सप्त प्रकीर्तिताः ॥ १ ॥

रवि, सोम, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि ये सात वारों के नाम हैं ॥ १ ॥

वारों के स्वामी

शिवो दुर्गा गुहो विष्णुर्ब्रह्मेन्द्रः कालसंज्ञकः ।
सूर्यादीनां क्रमादेते स्वामिनः परिकीर्तिताः ॥ २ ॥

शिव, दुर्गा, कार्त्तिकेय, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र तथा काल ये क्रम से रविवार आदि के स्वामी होते हैं ॥ २ ॥

वारों के सौम्य-क्रूरत्व—

गुरुश्चन्द्रोबुधःशुक्रः शुभवाराः शुभे स्मृताः ।
क्रूरास्तु क्रूरकृत्येषु ग्राह्याभौमार्कसूर्यजाः ॥ ३ ॥

गुरु, चन्द्र, बुध और शुक्र ये शुभवार शुभ कार्यों में, तथा मंगल, सूर्य और शनि ये अशुभवार क्रूरकार्यों में प्रशस्त होते हैं ॥ ३ ॥

वारों की स्थिर आदि संज्ञा—

रविः स्थिरः शीतकरश्चरश्च, महीज उग्रः शशिजश्च मिश्रः ।
लघुसुरेज्यो भृगुजो मृदुश्च, शनिश्च तीक्ष्णःकथितो मुनीन्द्रैः ॥

रवि स्थिर, चन्द्र चर, मंगल उग्र, बुध सम, गुरु लघु, शुक्र मृदु तथा शनि तीक्ष्ण संज्ञक होते हैं । अतः स्थिरादि संज्ञा के अनुसार इनमें कार्य करना प्रशस्त है ॥ ४ ॥

कालवेला—

कालस्य वेला रवितः शराक्षि कालानलागाम्बुधयो गजेन्दू ।
दिने निशायामृतुवेदनेत्र नगेषु रामा विधुदन्तिनौ च ॥ ५ ॥

दिन और रात्रि में आठ आठ यामार्द्ध होते हैं । दिन के यामार्द्ध में रविवार को पञ्चम, सोमवार को द्वितीय, मंगलवार को षष्ठ, बुधवार को तृतीय, गुरुवार को सप्तम, शुक्रवार को चतुर्थ और शनिवार को प्रथम व अष्टम तथा रात्रि के यामार्द्ध में रविवार को षष्ठ, सोमवार को चतुर्थ, मंगलवार को द्वितीय, बुधवार को सप्तम, गुरुवार को पञ्चम, शुक्रवार को तृतीय और शनिवार को प्रथम व अष्टम कालवेला होती है ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्धि योग—

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा जया क्षितिजनन्दने।
शनौ रिक्ता गुरौ पूर्णा सिद्धि योगाः प्रकीर्तिताः ॥ ६ ॥

शुक्रवार को नन्दा, बुधवार को भद्रा, मंगलवार को जया, शनिवार को रिक्ता और गुरुवार को पूर्णा तिथियां सिद्धि योग कारक होती हैं ॥ ६ ॥

मृत्युयोग—

आदित्यभौमयोर्नन्दा भद्रा भार्गवचन्द्रयोः।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ ७ ॥

रवि और मंगल को नन्दा, शुक्र और सोमवार को भद्रा बुधवार को जया, गुरुवार को रिक्ता और शनिवार को पूर्णा संज्ञक तिथियाँ मृत्युयोग कारक होती हैं। अतः इनमें यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥ ७ ॥

अमृतयोग—

चन्द्रार्कयोर्भवेत् पूर्णा कुजे भद्रा जया गुरौ।
शनिचन्द्रजयोर्नन्दा भृगौ रिक्ताऽमृताह्वया ॥ ८ ॥

रवि और सोमवार को पूर्णा, मंगलवार को भद्रा, गुरुवार को जया, शनि और बुधवार को नन्दा और शुक्रवार को रिक्ता संज्ञक तिथियाँ अमृत योग कारक होती हैं। अतः इनमें यात्रा करना मंगल दायक होता है ॥ ८ ॥

स्पष्टार्थ चक्र—

वार	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
दिन यामार्द्ध	५	२	६	३	७	४	१.८
रात्रि यामार्द्ध	६	४	२	७	५	३	१.८

कालवेला का फल—

यात्रायां मरणं काले वैधव्यं पाणिपीडने।
व्रते ब्रह्मवधः प्रोक्तः सर्वकर्मसु तं त्यजेत् ॥ ९ ॥

कालवेला में यात्रा करने से मृत्यु, विवाह करने से वैधव्य तथा व्रतबन्ध करने से ब्रह्महत्या का फल मिलता है। अतः सभी कार्यों में कालवेला वर्जनीय है ॥ ९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वारों की कुलिकादि संज्ञा—

कुलिकः कालवेला च यमघण्टश्च कण्टकः।
वाराद् द्विघ्ने क्रमान्मन्दे बुधे जीवे कुजे क्षणः॥ १०॥

वर्त्तमान वार से शनि, बुध, गुरु और मंगल तक गिनकर द्विगुणित करने से जो अङ्क आवे उसी दिन वही मुहूर्त्त क्रम से कुलिक, कालवेला, यमघण्ट और कण्टक संज्ञक होता है॥ १०॥

चक्र—

वार	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	संज्ञा
मुहूर्त्त	१४	१२	१०	८	६	४	२	कुलिक
"	८	६	४	२	१४	१२	१०	कालवेला
"	१०	८	६	४	२	१४	१२	यमघण्ट
"	६	४	२	१४	१२	१०	८	कण्टक

यामार्द्धकाल—

वारस्त्रिघ्नोऽष्टभिस्तष्टः सैकस्यादर्धयामकः॥ ११॥

वार को तीन से गुणा कर आठ का भाग देने से जो आवे उसमें एक जोड़ने से उस दिन वह अर्धयाम होता है॥ ११॥

कुलिकादि का फल—

कुलिके मरणं विद्याद्यमघण्टे च नाशनम्।
यामार्धे कार्यनाशः स्यात्कालवेला भयप्रदा॥ १२॥
मत्स्याङ्गमगधान्ध्रेषु यमघण्टस्तु दोषकृत्।
काश्मीरे कुलिकं दुष्टमर्धयामस्तु सर्वतः॥ १३॥
वाराधीशे बलोपेते विधौ वा बलसंयुते।
कुलिकाद् युक्तदोषास्तु विनश्यन्ति न संशयः॥ १४॥

कुलिक में मृत्यु, यमघण्ट में विद्या का नाश, यामार्द्ध में कार्य की हानि तथा कालवेला में भय की उत्पत्ति होती है।

मत्स्य, अङ्ग, मगध और आन्ध्र देश में यमघण्ट, काश्मीर में कुलिक और सभी स्थानों में अर्द्धयाम दोषकृत् होता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि वार का स्वामी अथवा चन्द्रमा बलवान् हो तो कुलिक आदि दुष्ट योगों का दोष नष्ट हो जाता है ॥ १२-१४ ॥

रवि आदि वारों में तेल लगाने का फल—

रविस्तापं कान्तिं वितरति शशी भूमितनयो,
मृतिं लक्ष्मीं चांद्रिः सुरपतिगुरुर्वित्तहरणम् ॥
विपत्तिं दैत्यानां गुरुरखिलभोगानुगमनम्,
नृणां तैलाभ्यंगात्सपदि कुरुते सूर्य्यतनयः ॥ १५ ॥

रविवार में तेल लगाने से कष्ट, सोमवार में कान्ति वृद्धि, मंगलवार में आयु का क्षय, बुधवार में धन का लाभ, गुरुवार में धन की हानि, शुक्रवार में विपत्ति और शनिवार में तेल लगाने से सब प्रकार से ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है ॥ १५ ॥

उपर्युक्त दोष में परिहार—

भार्गवे गोमयं भौमे मृदं दूर्वा बृहस्पतौ ।
रवौ पुष्पं विधायांतस्तैलाभ्यंगो न दोषकृत् ॥ १६ ॥
मन्त्रितं क्वथितं तैलं सार्षपं पुष्पवासितम् ।
द्रव्यान्तरयुतं वापि नैव दुष्येत् कदाचन ॥ १७ ॥

शुक्रवार को गोबर, मंगल को मिट्टी, बृहस्पतिवार को दूब रविवार को फूल तेल में मिलाकर लगाने से दोषकृत नहीं होता ॥ १६ ॥

अभिमन्त्रित, अच्छी प्रकार पकाया हुआ, सर्षप मिला हुआ, सुगन्धित अथवा अन्य पदार्थ मिश्रित तेल कभी भी दोषकृत नहीं होता ॥ १७ ॥

रविवार को वर्ज्यवस्तु—

तैलस्त्रीमद्यमांसानि यः करोति रवेर्दिने ।
सप्तजन्मसु रोगी स दरिद्रश्चैव जायते ॥ १८ ॥

रविवार के दिन जो मनुष्य, तेल, स्त्री, मद्य और मांस का सेवन करता है, वह सात जन्म तक रोगी और दरिद्र होता है ॥ १८ ॥

इति हेमपुष्पिका भाषाटीकायां वारप्रकरणाख्यस्तृतीयः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्रप्रकरणम्

अश्विनी भरणी चैव कृत्तिका रोहिणी मृगः।
आर्द्रा पुनर्वसुः पुष्यस्ततोऽश्लेषा मघास्तथा ॥ १ ॥
पूर्वाफाल्गुनिका तस्मादुत्तराफाल्गुनीका ततः।
हस्तश्चित्रा ततः स्वाती विशाखा तदनन्तरम् ॥ २ ॥
अनुराधा ततो ज्येष्ठा ततो मूलं निगद्यते।
पूर्वाषाढ़ोत्तराषाढ़ात्वभिजिच्छ्रवणस्ततः ॥ ३ ॥
धनिष्ठा शततारख्यं पूर्वाभाद्रपदा ततः।
उत्तराभाद्रपदा चैव रेवत्येतानि भानि च ॥ ४ ॥

अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशीर्ष, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वफाल्गुनी, उत्तरफाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, उत्तराषाढ़ा, अभिजित्, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती ये अट्ठाईस नक्षत्रों के नाम हैं ॥ ५-६ ॥

विशेष—राश्यादि के विचार में अभिजित् की गणना न होने के कारण नक्षत्रों की संख्या २७ ही मुख्य रूप से गिने जाते हैं। 'वैश्वधिष्ण्यांशपादस्य श्रुतेराद्याब्धिनाडिका। अभिजिद्गमितिर्ग्राह्या ह्यष्टाविंशतिभेषु सा" इस कथन से उत्तराषाढ़ा का अन्त्यचरण तथा श्रवण का प्रथम चार घटी मिलाकर कुल १९ घटी अभिजित् का मान होता है।

नक्षत्रों के स्वामी—

अश्वियमदहनकमलजशशीशूलभृददितिजीवफणिपितरः।
योन्यर्यमदिनकृत्वष्टपवनशक्राग्निमित्राश्च ॥ ५ ॥
शक्रो निर्ऋतिस्तोयं विश्वे ब्रह्माहरिर्वसुर्वरुणः।
अजपादोऽहिर्बुध्न्यः पूषा चेतीश्वरा भानाम् ॥ ६ ॥

अश्विनीकुमार, यम, अग्नि, ब्रह्मा, चन्द्रमा, शिव, अदिति, गुरु, सर्प, भग (सूर्य विशेष), अर्यमा (सूर्य विशेष), रवि, त्वष्टा (विश्वकर्मा), वायु, इन्द्राग्नी, मित्र, इन्द्र, निर्ऋति (राक्षस), जल, विश्वेदेव, ब्रह्मा, विष्णु, वसु, वरुण, अजचरण (सूर्य विशेष), अहिर्बुध्न्य (सूर्य विशेष), पूषा (सूर्य विशेष) ये क्रम से अश्विनी आदि नक्षत्रों के स्वामी हैं ॥ ५-६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ध्रुव-स्थिर संज्ञक नक्षत्र—

उत्तरात्रयरोहिण्यो भास्करश्च ध्रुवं स्थिरम्।
तत्र स्थिरं बीजगेहं शान्त्यारामादि सिद्ध्यति ॥ ७ ॥

उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा, रोहिणी नक्षत्र तथा रविवार ध्रुव या स्थिर संज्ञक होते हैं। इन नक्षत्रों में बीज बोना, मकान बनाना, वाटिका लगाना और शान्ति आदि स्थिर कर्म सिद्ध होते हैं ॥ ७ ॥

चल या चर संज्ञक नक्षत्र—

स्वात्यादित्ये श्रुतेस्त्रिणि चन्द्रश्चापि चरं चलम्।
तस्मिन्गजादिकारोहो वाटिकागमनादिकम् ॥ ८ ॥

स्वाती, पुनर्वसु, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा नक्षत्र तथा चन्द्रवार चर या चल संज्ञक होते हैं। इन नक्षत्रों में हाथी आदि की सवारी करना तथा बगीचा आदि में जाना शुभ होता है ॥ ८ ॥

उग्र या क्रूर संज्ञक नक्षत्र—

पूर्वात्रयं याम्यमघे उग्रं क्रूरं कुजस्तथा।
तस्मिन्घाताग्निशस्त्रानि विषशस्त्रादि सिद्ध्यति ॥ ९ ॥

पूर्वाफाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वाभाद्रपदा, भरणी तथा मघा नक्षत्र एवं मंगलवार उग्र या क्रूर संज्ञक होते हैं। इनमें मारण, अग्नि, विष, शस्त्र आदि कर्म सिद्ध होते हैं।

मिश्र-साधारण संज्ञक नक्षत्र—

विशाखाग्नेयभे सौम्यो मिश्रं साधारणं स्मृतम्।
तत्राग्निकार्यं मिश्रं च वृषोत्सर्गादि सिद्ध्यति ॥ १० ॥

विशाखा व कृत्तिका नक्षत्र तथा बुधवार मिश्र और साधारण संज्ञक होते हैं। इनमें अग्निकार्य, मिश्रित कर्म, वृषोत्सर्ग आदि कर्म सिद्ध होते हैं ॥ १० ॥

क्षिप्र-लघु संज्ञक नक्षत्र—

हस्ताश्विपुष्याभिजितः क्षिप्रं लघुगुरुस्तथा।
तस्मिन्पण्यरतिज्ञानं भूषाशिल्पकलादिकम् ॥ ११ ॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, अभिजित् नक्षत्र और गुरुवार क्षिप्र या लघु संज्ञक होते हैं। इनमें दुकान सम्बन्धी कर्म, स्त्री-पुरुष सम्बन्ध, ज्ञान, आभूषण, शिल्प कर्म आदि सिद्ध होते हैं ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मृदु-मैत्र संज्ञक नक्षत्र—

मृगान्त्यचित्रामित्रर्क्षं मृदुमैत्रं भृगुस्तथा।
तत्र गीताम्बरक्रीडा मित्रकार्यविभूषणम् ॥ १२ ॥

मृगशिर, रेवती, चित्रा, अनुराधा नक्षत्र और शुक्रवार मृदु या मैत्र संज्ञक होते हैं। इनमें गीत, वस्त्र, क्रीड़ा, मित्र और आभूषण सम्बन्धी कार्य सिद्ध होते हैं ॥ १२ ॥

तीक्ष्ण-दारुण संज्ञक नक्षत्र—

मूलेन्द्रार्द्राहिभं सौरिस्तीक्ष्णं दारुणसंज्ञकम्।
तत्राभिचारघातोग्रभेदाः पशुदमादिकम् ॥ १३ ॥

मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा, आश्लेषा नक्षत्र और शनिवार तीक्ष्ण या दारुण संज्ञक होते हैं। इनमें अभिचार (जादू), घात, उग्र, पशु दमन आदि कर्म सिद्ध होते हैं ॥ १३ ॥

नक्षत्रों के अधोमुखादिसंज्ञा—

मूलाहिमिश्रोग्रमधोमुखं भवेदूर्ध्वास्यमार्द्रेज्यहरित्रयं ध्रुवम्।
तिर्यङ्मुखं मैत्रकरानिलादिति ज्येष्ठाश्विभानीदृशकृत्यमेषु सत् ॥१४॥

मूल, अश्लेषा, मिश्र और उग्र नक्षत्रों की अधोमुख; आर्द्रा, पुष्य, श्रवण, धनिष्ठा और शतभिषा नक्षत्रों की उर्ध्वास्य (उपरि मुख) तथा अनुराधा, हस्त, स्वाती, पुनर्वसु, ज्येष्ठा और अश्विनी नक्षत्रों की तीर्यङ्मुख संज्ञा होती है। इन नक्षत्रों में इसी प्रकार का कार्य करना चाहिये। यथा कूप, तड़ाग आदि बनाना, गड़ढा से धन निकालना, गणित विद्या का आरम्भ करना आदि सम्बन्धी कर्म अधोमुख में, यंत्र, हल प्रवाह, गमनारम्भ आदि सम्बन्धी कार्य तिर्यङ्मुख में तथा प्रासाद आदि का निर्माण, ध्वज, धर्म, पट्टाभिषेकादि सम्बन्धी कार्य उर्ध्वास्य (ऊपर के मुख) में करना चाहिये ॥ १४ ॥

नक्षत्रों की अन्धादि संज्ञा—

अन्धाक्षश्चिपटाक्षश्च काणाक्षोदिव्यलोचनः।
गणयेद्रोहिणीपूर्वं सप्तवारमनुक्रमात् ॥ १५ ॥

रोहिणी से यथाक्रम सात-सात बार गणना करने से नक्षत्रों की क्रम से अन्धाक्ष, मन्दाक्ष, मध्यनेत्र तथा सुलोचन संज्ञा होती है ॥ १५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पष्टार्थं चक्र—

नक्षत्र							संज्ञा
रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पू. षा.	धनिष्ठा	रेवती	अन्ध
मृग.	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ. षा.	शतभि.	अश्वि.	मन्द
आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.	पू. भा.	भर.	काण
पुनर्वसु	पूर्वफा.	स्वाती	मूल	श्रवणा	उ. भा.	कृत्ति.	सुलोचन

अन्धाक्षादि नक्षत्रफल—

लाभोन्धके निकट एव हृतस्य चौरै-
र्द्रव्यस्य लब्धिरिह केकरभे प्रयत्नात् ।
दूरश्रुतिश्चिपिटभेषु कथंचिदेव,
न प्राप्तिरुत्तमविलोचनभे कदाचित् ॥ १६ ॥

अन्धाक्ष संज्ञक नक्षत्रों में वस्तु की चोरी या खो जाने पर उसका शीघ्र लाभ, मन्दाक्ष संज्ञक नक्षत्रों में वस्तु के हृत या खो जाने पर उसका प्रयत्न से लाभ, काण संज्ञक नक्षत्रों में वस्तु के हृत या खो जाने पर उसकी उपलब्धि नहीं होती तथा वह दूर चला गया होता है तथा सुलोचन संज्ञक नक्षत्रों में विनष्ट वस्तु की कभी भी उपलब्धि नहीं होती ॥ १६ ॥

चौर दिशा का ज्ञान—

अन्धे प्राच्यां गतं वस्तु मन्दे नेत्रे तु दक्षिणे ।
पश्चिमे मध्यनेत्रे स्यादथोदीच्यां सुलोचने ॥ १७ ॥

अन्ध संज्ञक नक्षत्र में पूर्व, मन्द संज्ञक नक्षत्र में दक्षिण, काण संज्ञक नक्षत्र में पश्चिम तथा सुलोचन संज्ञक नक्षत्र में उत्तर दिशा में वस्तु गई है, ऐसा प्रतिपादन करना चाहिये ॥ १७ ॥

त्रिपुष्करादि योग—

भद्रातिथी रविजभूतनयार्कवारे द्विशार्यमाजचरणादितिवह्निवैश्वे ।
त्रैपुष्करो भवति मृत्युविनाशवृद्धौ त्रैगुण्यदो द्विगुणकृद्वसुतक्षचान्द्रे ॥१८॥

द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी तिथियां; शनि, मङ्गल और रविवार तथा विशाखा, उत्तराफाल्गुनी, पूर्वाभाद्रपदा, पुनर्वसु, कृत्तिका और उत्तराषाढ़ा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नक्षत्रों के आपस में मिलने से त्रिपुष्कर तथा द्वितीया, सप्तमी और द्वादशी; रवि, शनि और मङ्गल तथा धनिष्ठा, चित्रा और मृगशिर इन नक्षत्रों के परस्पर मिलने पर द्विपुष्कर योग होता है। ये योग मृत्यु और विनाश में स्वनामानुसार क्रम से त्रिगुणित तथा द्विगुणित फल देते हैं ॥ १८ ॥

दग्धनक्षत्र—

याम्यं त्वाष्ट्रं वैश्वदेवं धनिष्ठार्यम्णं ज्येष्ठान्त्यं खेर्दग्धभं स्यात् ॥ १९ ॥

रविवार में भरणी, सोमवार में चित्रा, मंगल में उत्तराषाढा बुध में धनिष्ठा, गुरुवार में उत्तराफाल्गुनी, शुक्रवार में ज्येष्ठा और शनिवार में रेवती नक्षत्र के होने पर ये दग्ध संज्ञक होते हैं ॥ १९ ॥

शून्यनक्षत्र—

कदास्रभे त्वाष्ट्रवायू विश्वेज्यौ भगवासवौ।
विश्वश्रुती पाशिपौष्णे अजपाद्यग्निपित्र्यभे ॥ २० ॥
चित्रद्वीशौ शिवाख्यर्काः श्रुतिमूले यमेन्द्रभे।
चैत्रादिमासे शून्याख्यास्तारावित्तविनाशदाः ॥ २१ ॥

चैत्र में अश्विनी व रोहिणी, वैशाख में चित्रा व स्वाती, ज्येष्ठ में उत्तराषाढ़ा व पुष्य, आषाढ़ में पूर्वाफाल्गुनी व धनिष्ठा, श्रावण में उत्तराषाढ़ा व श्रवण, भाद्र में शतभिषा व रेवती, आश्विन में पूर्वाभाद्रपदा, कार्तिक में कृत्तिका व मघा, मार्गशीर्ष में चित्रा व विशाखा, पौष में आर्द्रा, अश्विनी व हस्त, माघ में श्रवण व मूल तथा फाल्गुन में भरणी व ज्येष्ठा नक्षत्र शून्य संज्ञक होते हैं। इनमें कार्य करने से धन का नाश होता है ॥ २०-२१ ॥

पञ्चक (भदवा या पचखा) तथा उसका फल—

धनिष्ठार्द्धोत्तरं पञ्च ऋक्षेष्वेषुत्यजेद्बुधः।
याम्यदिग्गमनं शय्यापूरणं गेहगोपनम् ॥ २२ ॥
स्तम्भोच्छ्रायं प्रेतदाहं तृणकाष्ठादिसंग्रहम्।
भवेत्पञ्चगुणं चात्र जातं लब्धं मृतंगतम् ॥ २३ ॥

धनिष्ठा का उत्तरार्द्ध, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा, उत्तराभाद्रपदा और रेवती इन पाँच नक्षत्रों की पंचक संज्ञा है। इनमें दक्षिण दिशा की यात्रा, घर का छाना, प्रेतदाह, तृण व काष्ठ का संग्रह तथा चारपाई बुनना वर्जित है। इसमें उक्त क्रियाओं के करने पर पञ्चगुणित अशुभ फल की प्राप्ति होती है ॥ २२-२३ ॥

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां नक्षत्रप्रकरणाख्यश्चतुर्थः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

योगप्रकरणम्

योग दो प्रकार के होते हैं—(१) विष्कम्भ आदि तथा (२) आनन्द आदि।

विष्कम्भ आदि योगों के नाम—

विष्कम्भः प्रीतिरायुष्मान्सौभाग्यः शोभनस्तथा।
अतिगण्डः सुकर्मा च धृतिः शूलस्तथैव च ॥ १ ॥
गण्डो वृद्धिर्ध्रुवश्चैव व्याघातो हर्षणस्तथा।
वज्रः सिद्धिर्व्यतीपातो वरीयान्परिघः शिवः ॥ २ ॥
सिद्धः साध्यः शुभः शुक्लो ब्रह्मा ऐन्द्रश्च वैधृतिः।
सप्तविंशतियोगास्तु कुर्युर्नामसमं फलम् ॥ ३ ॥

विष्कम्भ, प्रीति, आयुष्मान्, सौभाग्य, शोभन, अतिगण्ड, सुकर्मा, धृति, शूल, गण्ड, वृद्धि, ध्रुव, व्याघात, हर्षण, वज्र, सिद्धि, व्यतीपात, वरीयान्, परिघ, शिव, सिद्ध, साध्य, शुभ, शुक्ल, ब्रह्मा, ऐन्द्र और वैधृति ये सत्ताईस योग स्वनामानुसार फल देने वाले होते हैं ॥ १–३ ॥

योगों के स्वामी—

योगेशा यमविष्ण्विन्दुधातृजीवनिशाकराः।
इन्द्रतोयाहिवह्न्यर्क भूमरुद्भगतोयपाः ॥ ४ ॥
गणेशरुद्रधनदत्वष्टृमित्रषडाननाः।
सावित्री कमला गौरी नासत्यौ पितरौ दितिः ॥ ५ ॥

यम, विष्णु, चन्द्रमा, ब्रह्मा, गुरु, चन्द्रमा, इन्द्र, जल, सर्प, अग्नि, सूर्य, पृथ्वी, वायु, भग, वरुण, गणेश, रुद्र, कुबेर, विश्वकर्मा, मित्र, कार्त्तिकेय, सावित्री, लक्ष्मी, पार्वती, अश्विनीकुमार, पितर और दिति ये क्रम से विष्कम्भ आदि योगों के स्वामी होते हैं ॥ ४–५ ॥

विष्कम्भ आदि योग जानने का प्रकार—

यस्मिन्नृक्षे स्थितो भानुर्यत्र तिष्ठति चन्द्रमाः।
एकीकृत्य त्यजेदेकं योगा विष्कम्भकादयः ॥ ६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सूर्य जिस नक्षत्र में और चन्द्र जिस नक्षत्र में हों उन दोनों का योग कर उसमें एक घटा देने पर विष्कम्भ आदि योग होते हैं ॥ ६ ॥

योगों में वर्ज्यघटी—

विरुद्धसंज्ञा इह ये च योगास्तेषामनिष्टः खलु पाद आद्यः ।
सवैधृतिस्तु व्यतिपातनामा सर्वोऽप्यनिष्टः परिघस्य चार्द्धम् ॥७॥
तिस्रस्तु योगे प्रथमे च वज्रे व्याघातसंज्ञे नवपञ्चशूले ।
गण्डेऽतिगण्डे च षडेव नाड्यः शुभेषु कार्येषु विवर्जनीयाः ॥८॥

निन्दित संज्ञा वाले योगों में उनका प्रथम चरण अनिष्टकारक होता है, लेकिन वैधृति और व्यतीपात योगों के चारों चरण तथा परिघ योग के प्रथम दो चरण अनिष्टकारक होते हैं। विष्कम्भ और वज्र योग की तीन घटी, व्याघात की नौ घटी, शूल की पाँच घटी तथा गण्ड और अतिगण्ड की ६ घटी शुभ कार्य में वर्जित है ॥ ७–८ ॥

२–आनन्दादियोगों के नाम—

आनन्दाख्यः कालदण्डश्च धूम्रो धाता सौम्योध्वाङ्क्षकेतू क्रमेण ।
श्रीवत्साख्यो वज्रकं मुद्गरश्च छत्रं मित्रं मानसं पद्मलुम्बौ ॥९॥
उत्पातमृत्यू किल काणसिद्धी शुभोऽमृताख्यो मुसलं गदश्च ।
मातङ्गरक्षश्चरसुस्थिराख्यः प्रवर्धमानाः फलदाः स्वनाम्ना ॥१०॥

आनन्द, कालदण्ड, धूम्र, धाता, सौम्य, ध्वांक्ष, केतु, श्रीवत्स, वज्र, मुद्गर, छत्र, मित्र, मानस, पद्म, लुम्ब, उत्पात, मृत्यु, काण, सिद्धि, शुभ, अमृत, मुसल, गद, मातङ्ग, रक्ष, चर, सुस्थिर और प्रवर्धमान ये अट्ठाईस योग स्वनामानुसार फल देने वाले होते हैं ॥ ९–१० ॥

आनन्दादि योग जानने का प्रकार—

दास्रादर्के मृगादिन्दौ सार्पाद्भौमे करादुबुधे ।
मैत्राद्गुरौ भृगौ वैश्वाद् गण्या मन्दे च वारुणात् ॥ ११ ॥

रविवार को अश्विनी से, सोमवार को मृगशीर्ष, मंगलवार को अश्लेषा, बुधवार को हस्त, गुरुवार को अनुराधा, शुक्रवार को उत्तराषाढ़ा और शनिवार को शतभिषा से गणना करने से जो संख्या आवे उससे आनन्दादि संख्यक योग समझना चाहिये ॥ ११ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्पष्टार्थ चक्र—

योग	रवि	सोम	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
आनन्द	अश्वि.	मृग.	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तरापा.	शतभि.
कालदण्ड	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित	पू. भा.
धूम्र	कृत्ति.	पुनर्वसु	पूर्वा फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.
धाता	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती
सौम्य	मृग.	अश्ले.	हस्त	अनुराधा	उत्तरापा.	शतभिषा	अश्विनी
ध्वांक्ष	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा.	भरणी
केतु	पुनर्व.	पूर्वफा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका
श्रीवत्स	पुष्य	उ.फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी
वज्र	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उत्तरापा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशि.
मुद्गर	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा
छत्र	पू.फा.	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु
मित्र	उ.फा.	विशा.	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य
मानस	हस्त	अनु.	उ. षा.	शतभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	अश्लेषा
पद्म	चित्रा	ज्येष्ठा	अभिजित्	पूर्वाभा.	भरणी	आर्द्रा	मघा
लुम्ब	स्वाती	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्व फा.
उत्पात	विशा.	पू.षा.	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फ.
मृत्यु	अनु.	उ. षा.	रातभिषा	अश्विनी	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त
काण	ज्येष्ठा	अभि.	पूर्वा भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा
सिद्धि	मूल	श्रवण	उ. भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्व फा.	स्वाती
शुभ	पू.षा.	धनि.	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशा.
अमृत	उ.षा.	शत.	अश्विनी	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुरा.
मुसल	अभि.	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा
गद	श्रवण	उ.भा.	कृत्तिका	पुनर्वसु	पूर्व फा.	स्वाती	मूल
मातङ्ग	धनिष्ठा	रेवती	रोहिणी	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पूर्षपा.
रक्ष	शत.	अश्वि.	मृगशिरा	अश्लेषा	हस्त	अनुराधा	उ. पा.
चर	पू.भा.	भरणी	आर्द्रा	मघा	चित्रा	ज्येष्ठा	अभि.
सुस्थिर	उ.भा.	कृत्ति.	पुनर्वसु	पूर्व फा.	स्वाती	मूल	श्रवण
प्रवर्धमान	रेवती	रोहि.	पुष्य	उ. फा.	विशाखा	पूर्वाषाढ़ा	धनिष्ठा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ज्य घटी—

ध्वाङ्क्षे वज्रे मुद्गरे चेषुनाड्यो वर्ज्यावेदाः पद्मलुम्बे गदेऽश्वाः ।
धूम्रे काणे मौसले भूर्द्वयं द्वे रक्षोमृत्युत्पातकालाश्च सर्वे ॥१२॥

ध्वांक्ष, वज्र और मुद्गर की पाँच घटी, पद्म और लुम्ब की चार घटी, गद की सात घटी, धूम्र की एक घटी, काण और मुसल की दो घटी तथा चर की तीन घटी शुभ कार्यों में वर्जित है। राक्षस, मृत्यु, उत्पात और काल की सब घटी सर्वथा त्याज्य है।

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां योगप्रकरणाख्यः पञ्चमः ॥

करणप्रकरणम्

चर-करणों के नाम—

बबश्च बालवश्चैव कौलवस्तैतिलस्तथा ।
गरश्च वणिजोविष्टिः सप्तैतानि चराणि च ॥ १ ॥

स्थिर करणों के नाम—

कृष्णपक्षे चतुर्दश्यां शकुनिः पश्चिमे दले ।
चतुष्पादश्च नागश्च अमावास्यादलद्वये ॥ २ ॥
शुक्लप्रतिपदायास्तु किंस्तुघ्नः प्रथमे दले ।
स्थिराण्येतानि चत्वारि करणानि जगुर्बुधाः ॥ ३ ॥

बब, बालव, कौलव, तैतिल, गर, वणिज और विष्टि ये सात करण चर संज्ञक होते हैं।

कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के उत्तरार्द्ध में शकुनि, अमावास्या के पूर्वार्द्ध में नाग और उत्तरार्द्ध में चतुष्पद तथा शुक्लपक्ष की प्रतिपदा के पूर्वार्द्ध में किंस्तुघ्न करण होते हैं। ये चारों करणों की स्थिर संज्ञा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

स्पष्टार्थ चक्र—

पक्ष	कृष्णपक्ष														
तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	३०
पूर्वार्द्ध	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	चतुष्पद
उत्तरार्द्ध	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	शकुनि	नाग

पक्ष	शुक्लपक्ष														
तिथि	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
पूर्वार्द्ध	किंस्तुघ्न	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि
उत्तरार्द्ध	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव	कौलव	गर	विष्टि	बालव	तैतिल	वणिज	बव

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करणानयन—

वर्त्तमानतिथिर्व्येकाद्विघ्नी सप्तावशेषकम् ।
तिथेः पूर्वार्द्धकरणं तत्सैकं स्यात्परेदले ॥ ४ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से गिनकर गत तिथियों को २ से गुणित कर, एक घटाने से जो शेष आवे उसमें ७ का भाग देने से वर्त्तमान तिथि के पूर्वार्द्ध में बव आदि करण होते हैं। उसी में एक जोड़ देने से तिथियों के उत्तरार्द्ध कालिक करण हो जाते हैं ॥ ४ ॥

करणों के स्वामी—

इन्द्रो ब्रह्मामित्रनामार्य्यमाभूः, श्रीः कीनाशश्चेति तिथ्यर्द्धनाथाः ।
कालयुक्षाख्यौ सर्पवायुतथैव, ये चत्वारस्ते स्थिराणां चतुर्णाम् ॥५॥

इन्द्र, ब्रह्मा, सूर्य, पृथ्वी, लक्ष्मी, यम, कलियुग, रुद्र, सर्प और वायु ये क्रम से बवादि करणों के स्वामी होते हैं ॥ ५ ॥

करणों में विहित कर्म—

बवे पौष्टिकं बालवे सुस्थिरं सद्द्विजातेर्हितं कौलवे स्त्रीषु मैत्र्यम् ।
चरे तैतिले स्वाश्रयं यद्गरे भूकृषिं वीजवापं वणिज्ये वणिज्यम् ॥ ६ ॥
खलानां हृतिं दारुणं कर्म विष्ट्यां तथा शाकुने मन्त्रयन्त्रौषधाद्यम् ।
गवां ब्राह्मणादेः पितृज्यां पशौ तद्भुजङ्गे ध्रुवोग्रं परस्मिकलाद्यम् ॥ ७ ॥

बव में पुष्टि सम्बन्धी, बालव में वास्तु आदि स्थिर कर्म, कौलव में सज्जन मैत्री, स्त्री आदि से सम्बन्धित कर्म, तैतिल में सज्जन राजसेवा आदि कर्म, गर में कृषि आदि से सम्बन्धित कर्म, वणिज में क्रय विक्रय आदि कर्म, विष्टि में वध, बन्धन आदि से सम्बन्धित उग्र कर्म, शकुनि में मंत्र, यंत्रादि से सम्बन्धित कर्म, चतुष्पद में गाय, ब्राह्मण पितरों के श्राद्ध आदि सम्बन्धी कर्म, नाग में स्थिर कर्म तथा किंस्तुघ्न में नृत्य, गीत आदि से सम्बन्धित कर्म करना चाहिये ॥ ६–७ ॥

विष्टि (भद्रा) करण में त्याज्य—

विष्टिस्तु सर्वथा त्याज्या क्रमेणैवागता तु या ।
अक्रमेणागता भद्रा सर्वकार्येषु शोभना ॥ ८ ॥

क्रम (पूर्वार्द्ध की भद्रा दिन में और उत्तरार्द्ध की भद्रा रात्रि में) से आगत भद्रा सभी प्रकार के शुभ कार्य में त्याज्य है। इसके विपरीत अर्थात् पूर्वार्द्ध की भद्रा रात्रि में और उत्तरार्द्ध की भद्रा दिन में सब कार्यों में शुभ फल देने वाली होती है ॥ ८ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भद्रा में सर्वथा त्याज्य—

भद्रायां द्वे न कर्त्तव्ये श्रावणी फाल्गुनी तथा।
श्रावणी नृपतिं हन्ति ग्रामं दहति फाल्गुनी ॥ ९ ॥

भद्रा में श्रावणी और फाल्गुनी कर्म नहीं करना चाहिये। श्रावणी करने से राजा का नाश और फाल्गुनी करने से ग्राम में अग्निभय होता है ॥ ९ ॥

भद्रा का ज्ञान—

शुक्ले पूर्वार्द्धेऽष्टमीपञ्चदश्योर्भद्रैकादश्यां चतुर्थ्यां परार्द्धे।
कृष्णेऽन्त्यार्धे स्यात्तृतीयादशम्योः पूर्वे भागे सप्तमीशम्भुतिथ्योः॥१०॥

शुक्लपक्ष की अष्टमी और पूर्णिमा के पूर्वार्द्ध में तथा एकादशी और चतुर्थी के उत्तरार्द्ध में भद्रा रहती है

तथा कृष्ण पक्ष की तृतीया और दशमी के उत्तरार्द्ध में तथा सप्तमी और चतुर्दशी के पूर्वार्द्ध में भद्रा रहती है ॥ १० ॥

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां करणप्रकरणाख्यः षष्ठः ॥

राशिप्रकरणम्

राशि नाम—

मेषो वृषोऽथ मिथुनं कर्कः सिंहश्चकन्यका।
तुला च वृश्चिकश्चैव धनुश्च मकरस्तथा ॥ १ ॥
कुम्भो मीनस्तथा ज्ञेया राशिसंज्ञा यथाक्रमम्।
एकैकस्मिंस्तथा राशौ नक्षत्रचरणा नव ॥ २ ॥

मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन ये क्रम से द्वादश राशियों के नाम हैं। नक्षत्र के नौ-नौ चरण की एक-एक राशि होती है ॥ १-२ ॥

जैसे—अश्विनी और भरणी के चारों तथा कृत्तिका का एक चरण मेष; कृत्तिका के तीन, रोहिणी के चार तथा मृगशिर का दो चरण वृष; मृगशिर का दो, आर्द्रा का चार तथा पुनर्वसु का तीन चरण मिथुन; पुनर्वसु का एक, पुष्य और अश्लेषा के चारों चरण कर्क; मघा और पूर्व फाल्गुनी के चारों चरण तथा उत्तर फाल्गुनी का एक चरण सिंह; उत्तर फाल्गुनी के तीन, हस्त के चारों तथा चित्रा का दो

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चरण कन्या; चित्रा का दो, स्वाती के चारों तथा विशाखा का तीन चरण तुला; विशाखा का एक, अनुराधा और ज्येष्ठा के चारों चरण वृश्चिक; मूल और पूर्वाषाढ़ा के चारों तथा उत्तराषाढ़ा का एक चरण धनु; उत्तराषाढ़ा के तीन, श्रवण के चारों तथा धनिष्ठा के दो चरण मकर; धनिष्ठा के दो, शतभिषा के चारों तथा पूर्वाभाद्रपदा के तीन चरण कुम्भ और पूर्वाभाद्रपदा का एक, उत्तराभाद्रपदा तथा रेवती के चारों चरण मिलाकर मीन राशि होती है।

स्पष्टार्थ नामाक्षर से राशि बोधक चक्र—

राशि	नामाक्षर								
मेष	चू	चे	चो	ला	लि	लू	ले	लो	अ
वृष	इ	उ	ए	ओ	वा	वि	वू	वे	वो
मिथुन	क	कि	कु	घ	ङ	छ	के	को	ह
कर्क	हि	हु	हे	हो	डा	डि	डू	डे	डो
सिंह	मा	मि	मू	मे	मो	टा	टि	टू	टे
कन्या	टो	प	पि	पु	ष	ण	ठ	पे	पो
तुला	रा	रि	रू	रे	रो	ता	ति	तू	ते
वृश्चिक	तो	न	नि	नू	ने	नो	या	यि	यू
धनु	ये	यो	भ	भि	भु	धा	फा	ढा	भे
मकर	भो	ज जी	जू जे	जो खा	खि	खु	खे	खो ग	गि
कुम्भ	गु	गे	गो	सा	सि	सू	से	सो	दा
मीन	दी	दू	थ	झ	ञ	दे	दो	च	ची

राशियों के स्वामी—

मेषवृश्चिकयोर्भौमः शुक्रो वृषतुलाधिपः।
कन्यामिथुनयोः सौम्यः कर्क स्वामी च चन्द्रमा ॥ ३ ॥
सिंहस्याधिपतिः सूर्यो गुरुस्तु धनमीनयः।
शनिर्नक्रस्य कुम्भस्य कथितो गणकोत्तमैः ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेष और वृष का मंगल, वृष और तुला का शुक्र, कन्या और मिथुन का बुध, कर्क का चन्द्रमा, सिंह का सूर्य, धनु और मीन का गुरु तथा मकर और कुम्भ का शनि स्वामी होते हैं ॥ ३-४ ॥

राशियों की पुं-आदि संज्ञा—

पुंस्त्री क्रूराक्रूरौ चरस्थिरद्विस्वभाव संज्ञा स्युः ।
क्षत्रिय-वैश्यक-शुद्र ब्राह्मणवर्णाः क्रमादजाद्यास्ते ॥ ५ ॥

मेषादि द्वादश राशियों के क्रम से पुरुष और स्त्री; अशुभ (क्रूर) और शुभ (अक्रूर); चर, स्थिर और द्विस्वभाव तथा क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और ब्राह्मण वर्ण होते हैं ॥५॥

स्पष्टार्थ चक्र—

राशि	स्वामी	पुं. स्त्री	क्रूर सौम्य	चरादि	वर्ण
मेष	मङ्गल	पुरुष	क्रूर	चर	क्षत्रिय
वृष	शुक्र	स्त्री	सौम्य	स्थिर	वैश्य
मिथुन	बुध	पुरुष	क्रूर	द्विस्वभाव	शूद्र
कर्क	चन्द्र	स्त्री	सौम्य	चर	ब्राह्मण
सिंह	रवि	पुरुष	क्रूर	स्थिर	क्षत्रिय
कन्या	बुध	स्त्री	सौम्य	द्विस्वभाव	वैश्य
तुला	शुक्र	पुरुष	क्रूर	चर	शूद्र
वृश्चिक	मङ्गल	स्त्री	सौम्य	स्थिर	ब्राह्मण
धनु	गुरु	पुरुष	क्रूर	द्विस्वभाव	क्षत्रिय
मकर	शनि	स्त्री	सौम्य	चर	वैश्य
कुम्भ	शनि	पुरुष	क्रूर	स्थिर	शूद्र
मीन	गुरु	स्त्री	सौम्य	द्विस्वभाव	ब्राह्मण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राशियों के शीर्षोदयादि संज्ञा तथा दिन रात्रि आदि बली—

गोजाश्विकर्कमिथुनाः सशृगा निशाख्याः,
पृष्ठोदया विमिथुनाः कथितास्त एव।
शीर्षोदया दिनबलाश्च भवन्ति शेषा,
लग्नं समेत्युभयतः पृथुरामयुग्मम् ॥ ६ ॥

सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, मिथुन और कुम्भ शीर्षोदय, मीन उभयोदय तथा मेष, वृष, कर्क, धनु और मकर पृष्ठोदय संज्ञक होते हैं ॥ ५½ ॥

मेष, वृष, कर्क, धनु और मकर राशियाँ रात्रिबली तथा शेष मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक और कुम्भ राशियाँ दिनबली होते हैं ॥ ६ ॥

राशियों की द्विपदादि संज्ञा—

वृषसिंहधनुर्मेषामकरार्धं चतुष्पदाः।
मृगोत्तरार्द्धं कुम्भश्च मीनश्चैते जले चराः ॥ ७ ॥
नरा मिथुनकन्ये च धनुः पूर्वार्द्धकं तुला।
कीटस्तु कर्कटः प्रोक्तो वृश्चिकश्च सरीसृपः ॥ ८ ॥

मेष, वृष, सिंह, धनु का उत्तरार्द्ध और मकर राशि का पूर्वार्द्ध चतुष्पद; मकर का उत्तरार्द्ध, कुम्भ और मीन राशि जलचर; मिथुन, तुला, कन्या और धनु का पूर्वार्द्ध द्विपद; कर्क राशि कीट तथा वृश्चिक राशि सरीसृप संज्ञक होते हैं ॥ ७-८ ॥

ताराओं के नाम—

जन्मसंपत्त्विपत्क्षेमप्रत्यरिः साधको वधः।
मित्रं परममित्रन्तु जन्मभाच्च पुनः पुनः ॥ ९ ॥

जन्म कालिक नक्षत्र से जन्म, सम्पत्, विपत्, क्षेम, प्रत्यरि, साधक, वध, मैत्र और अतिमैत्र तारायें होती हैं ॥ ९ ॥

ताराओं का ज्ञान—

जन्मभाद्दिनभं यावत् संख्यैव नवतष्टिता।
तारा तत्राद्यपञ्चाद्रित्रिसंख्या न शुभप्रदाः ॥ १० ॥

जन्मकालिक नक्षत्र से जिस दिन तारा का ज्ञान करना हो, उस दिन के नक्षत्र पर्यन्त गणना कर नौ का भाग देने से शेष संख्या तारा होती है। उनमें पहली, तीसरी, पाँचवीं और सातवीं तारायें अशुभ तथा दूसरी, चौथी, छठी, आठवीं और नवमी तारायें शुभ होती हैं ॥ १० ॥

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां राशिप्रकरणाख्यः सप्तमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहप्रकरणम्

रविविधुक्षितिजाबुधवाक्पती भृगुशनी च तमः शिखिनो ग्रहाः ॥ १ ॥

सूर्य, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु और केतु ये नौ ग्रह होते हैं ॥ १ ॥

दिशाओं के स्वामी--

रविः शुक्रो महीसूनुः स्वर्भानुर्भानुजो विधुः ।
बुधो बृहस्पतिश्चैव दिशामीशास्तथा ग्रहाः ॥ २ ॥

रवि, शुक्र, मङ्गल, राहु, शनि, चन्द्र, बुध और गुरु ये पूर्व आदि आठ दिशाओं के स्वामी होते हैं ॥ २

ग्रहों की सौम्यक्रूरादि संज्ञा—

क्षीणश्चन्द्रोरविर्भौमः पापो राहुः शनिः शिखी ।
बुधोऽपि तैर्युतः पापः शेषाश्चैव शुभग्रहाः ॥ ३ ॥
क्षीणेन्द्वर्कार्किभौमाः स्युः पापाः सौम्येऽपि तद्युतः ।
राहुकेतू पापतरौ पापः पापयुतस्तथा ॥ ४ ॥

क्षीणचन्द्र, रवि, मङ्गल, राहु, शनि और केतु पापग्रह तथा बुध, गुरु, शुक्र और पूर्ण चन्द्र शुभग्रह हैं। बुध जब पापग्रहों से युक्त हो तो पापग्रह तथा राहु, केतु, और पापग्रह से युक्त पापग्रह अधिक पापग्रह होते हैं ॥ ३-४ ॥

क्षीण चन्द्र—

कृष्णाष्टमीदलादूर्ध्वं यावच्छुक्लाष्टमी भवेत् ।
तावत् क्षीणः शशी ज्ञेयः सम्पूर्णस्तदनन्तरम् ॥ ५ ॥

कृष्णपक्ष की अष्टमी के उत्तरार्द्ध से शुक्लपक्ष की अष्टमी पर्यन्त चन्द्रमा क्षीण तथा इसके उपरान्त पूर्ण कहलाता है ॥ ५ ॥

ग्रहों के उच्च-नीच—

अजवृषभभृगाङ्गनाकुलीरा झषवणिजौ च दिवाकरादितुङ्गाः ।
दशशिखिमनुयुक्तिथीन्द्रियांशैस्त्रिनवकविंशतिभिश्च तेऽस्तनीचाः ॥६॥

मेष आदि सात राशियों में क्रम से दश, तीन, अट्ठाईस, पन्द्रह, पाँच, सत्ताईस

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और बीस अंश पर्यन्त सूर्यादि ग्रहों के उच्च स्थान तथा इन राशियों से सप्तम राशियों में उक्त अंश पर्यन्त नीच स्थान हैं ॥ ६ ॥

ग्रहों के उच्च और नीच चक्र—

	ग्रह	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च	राशि	मेष	वृष	मिथुन	कर्क	सिंह	कन्या	तुला
	अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०
नीच	राशि	तुला	वृश्चिक	कर्क	मीन	मकर	कन्या	मेष
	अंश	१०	३	२८	१५	५	२७	२०

ग्रहों के दृष्टि स्थान—

त्रिदशत्रिकोणचतुरस्रसप्तमान्यवलोकयन्ति चरणाभिवृद्धितः ।
रविजामरेज्यरुधिराः परे च ये क्रमशो भवन्ति किल वीक्षणेऽधिकाः ॥७॥

प्रत्येक ग्रह जिस स्थान में रहता है, उससे तृतीय और दशम को एक चरण से, नवम और पञ्चम को दो चरणों से, चतुर्थ और अष्टम को तीन चरणों से और सप्तम को चारों चरणों से देखते हैं। परन्तु दशम और तृतीय को शनि, नवम और पञ्चम को गुरु तथा चतुर्थ और अष्टम को मङ्गल पूर्ण दृष्टि से देखते हैं ॥ ७ ॥

राहु-केतु की दृष्टि—

सुते सप्तमे पूर्णदृष्टिस्तमस्य तृतीये रिपौ पाददृष्टिर्नितान्तम् ।
धने राज्यगेहेऽर्धदृष्टिं वदन्ति स्वगेहे त्रिपादं भवेच्चैव केतोः ॥ ८ ॥

पञ्चम और सप्तम स्थान में राहु की पूर्ण दृष्टि होती है। तृतीय और षष्ठ में एक चरण, द्वितीय और दशम में दो चरण तथा अपने घर में त्रिपाद दृष्टि होती है। इसी प्रकार केतु की भी दृष्टि जाननी चाहिये ॥ ८ ॥

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां ग्रहप्रकरणाख्योऽष्टमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शुभाशुभ-योग-प्रकरणम्

तिथि-वारोत्थ सिद्धि योग—

शुक्रे नन्दा बुधे भद्रा शनौ रिक्ता कुजे जया ।
गुरौ पूर्णा च दैवज्ञैः सिद्धियोगाः प्रकीर्तिताः ॥ १ ॥

शुक्र में नन्दा, बुध में भद्रा, शनि में रिक्ता, मङ्गल में जया और गुरु में पूर्णा तिथि सिद्धि योग कारक होते हैं ॥ १ ॥

तिथि वार से अमृत योग—

रवौ सोमे तथा पूर्णा कुजे भद्रा गुरौ जया ।
तथा बुधे शनौ नन्दा शुक्रे रिक्तामृताऽह्वया ॥ २ ॥

रवि और चन्द्र में पूर्णा, मङ्गल में भद्रा, गुरु में जया, शुक्र में रिक्ता तथा बुध और शनि में नन्दा अमृत योग होते हैं ॥ २ ॥

तिथि वार से मृत्युयोग—

नन्दा रवौ कुजे चैव भद्रा भार्गवसोमयोः ।
बुधे जया गुरौ रिक्ता शनौ पूर्णा च मृत्युदा ॥ ३ ॥

यदि रवि और मङ्गल में नन्दा, शुक्र और चन्द्रवार में भद्रा, बुध में जया, गुरु में रिक्ता और शनिवार में पूर्णा तिथि हो तो वह मृत्युयोग कहलाता है ॥ ३ ॥

तिथियों में वर्ज्य वस्तु—

तैलं विवर्जयेत् षष्ठ्यामष्टम्यां मांसमेव च ।
क्षौरक्रिया चतुर्दश्यां दर्शे स्त्रीसेवनं तथा ॥ ४ ॥

षष्ठी में तेल, अष्टमी में मांस, चतुर्दशी में क्षौरकर्म और अमावास्या में स्त्री सेवन नहीं करना चाहिये ॥ ४ ॥

उक्त दोष में परिहार—

शनौ षष्ठ्यां स्मृतं तैलं महाष्टम्यां पलाशनम् ।
क्षौरशुक्लचतुर्दश्यां दीपमाल्यां च मैथुनम् ॥ ५ ॥

शनिवार से युक्त षष्ठी में तेल, महाष्टमी (आश्विन शुक्ल अष्टमी) में मांस, शुक्लपक्ष की चतुर्दशी में क्षौर और दीपावली की अमावास्या में स्त्री सेवन करने में दोष नहीं होता है ॥ ५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वार-नक्षत्र से अमृत-सिद्ध योग—

हस्ते रवौ शशधरे च मृगोत्तमाङ्गम्,
भौमेऽश्विनी बुधदिने च तथानुराधा।
तिष्यो गुरौ भृगुसुतेऽपि च पौष्णधिष्ण्यम्,
रोहिण्यथार्कतनयेऽमृतसिद्धियोगाः ॥ ६ ॥

रविवार में हस्त, सोमवार में मृगशिर्ष, मङ्गलवार में अश्विनी, बुधवार में अनुराधा, गुरुवार में पुष्य, शुक्रवार में रेवती तथा शनिवार में रोहिणी नक्षत्र होने से अमृत-सिद्ध योग होता है ॥ ६ ॥

वार-नक्षत्र से अमृत योग—

हस्ते सूर्यश्चन्द्रमा रोहिणीषु भौमो मूले सोमदेवे बुधश्च।
भाग्ये जीवो वैष्णवे भार्गवश्च पित्र्ये शौरिः कीर्तिताश्चामृताख्याः ॥७॥

रविवार में हस्त, सोमवार में रोहिणी, मङ्गलवार में मूल, बुधवार में मृगशिरा, गुरुवार में पूर्वाफाल्गुनी, शुक्रवार में श्रवण और शनिवार में मघा अमृत योग होता है ॥ ७ ॥

नक्षत्र-वारों से अन्य शुभ योग—

मूलं रवौ पुष्यकरोत्तराणि वेधा मृगाङ्कः श्रवणा च सोमे।
कृशानु पुष्योत्तरभानि भौमे बुधाऽनुराधा वरुणः कृशानुः ॥ ८ ॥
बृहस्पतौ पुष्यपुनर्वसू च भगोऽश्विनी च श्रवणा च शुक्रे।
शनैश्चरे स्वातिपितामहौ च योगाः किलैते शुभदायिनः स्युः ॥ ९ ॥

रविवार में मूल, पुष्य और तीनों उत्तरा; सोमवार में रोहिणी, मृगशिर्ष और श्रवणा; मङ्गलवार में कृत्तिका, पुष्य और तीनों उत्तरा; बुधवार में अनुराधा, शतभिषा और कृत्तिका; गुरुवार में पुष्य और पुनर्वसु; शुक्रवार में पूर्वाफाल्गुनी, अश्विनी और श्रवण तथा शनिवार में स्वाती और रोहिणी नक्षत्रों के होने से शुभयोग होता है ॥ ८–९ ॥

सर्वार्थ-सिद्धि योग—

सूर्येऽर्कमूलोत्तरपुष्यदास्रं चन्द्रे श्रुतिब्राह्मशशीज्यमैत्र्यम्।
भौमेऽश्व्यहिर्बुध्न्यकृशानुसार्पं ज्ञे ब्राह्ममैत्रार्ककृशानुचाब्द्रम् ॥१०॥
जीवेऽन्त्यमैत्राश्व्यदितीज्यधिष्ण्यं शुक्रेन्त्यमैत्राश्व्यदिति श्रवोभम्।
शनौ श्रुतिब्राह्मसमीरभानि सर्वार्थसिद्ध्यै कथितानि पूर्वैः ॥११॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रविवार में हस्त, मूल, तीनों उत्तरा, पुष्य और अश्विनी; सोमवार में, श्रवण, रोहिणी, मृगशिरा, पुष्य और अनुराधा; मङ्गलवार में अश्विनी, उत्तराभाद्रपदा, कृत्तिका और अश्लेषा; बुधवार में रोहिणी, अनुराधा, कृत्तिका, हस्त और मृगशिरा; गुरुवार में रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु और पुष्य; शुक्रवार में रेवती, अनुराधा, अश्विनी, पुनर्वसु और श्रवण तथा शनिवार में रोहिणी, स्वाती और श्रवण इन नक्षत्रों के होने से सर्वार्थसिद्धियोग होता है, ऐसा पूर्वाचार्यों ने कहा है ॥ १०-११ ॥

नक्षत्र-वारों से मृत्युयोग—

त्यज रविमनुराधे वैश्वदेवे च सोमम्,
शतभिषजि च भौमं चन्द्रजं चापि दस्रे।
मृगशिरसि सुरेज्यं सर्पदेवे च शुक्रम्
रविसुतमपि हस्ते मृत्युयोगाभिधानम् ॥ १२ ॥

रविवार में अनुराधा, सोमवार में उत्तराषाढ़ा, मङ्गलवार में शतभिषा, बुधवार में अश्विनी, गुरुवार में मृगशिरा, शुक्रवार में अश्लेषा और शनिवार में हस्त नक्षत्र के होने से मृत्युयोग होता है ॥ १२ ॥

यमघण्ट योग—

मघा विशाखा आर्द्रा च मूलमृक्षं च कृत्तिका।
रोहिणी हस्त इत्युक्ता यमघण्टाः क्रमाद्रवेः ॥ १२ ॥

रविवार में मघा, सोमवार में विशाखा, मङ्गलवार में आर्द्रा, बुधवार में मूल, गुरुवार में कृत्तिका, शुक्रवार में रोहिणी तथा शनिवार में हस्त नक्षत्र के होने से यमघण्ट योग होता है ॥ १३ ॥

दोष परिहार—

यमघण्टे त्यजेदष्टौ मृत्यौ द्वादश नाडिकाः।
अन्येषां पापयोगानां मध्याह्नात्परतः शुभम् ॥ १४ ॥

यमघण्ट की आठ घटी तथा मृत्युयोग की बारह घटी छोड़ देनी चाहिये। शेष पापयोगों में मध्याह्न के पश्चात् दोष नहीं लगता ॥ १४ ॥

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां शुभाशुभयोगप्रकरणाख्यो नवमः ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवाहप्रकरणम्

युग्म अब्द विचार

अब्देषु युग्मेषु च कन्यकानां स्वजन्मवर्षाच्छुभदो विवाहः ।
अयुग्मवर्षेषु शुभो नराणां विपर्यये दुःखगदःप्रदः स्यात् ॥ १ ॥

अपने जन्मवर्ष से कन्या का विवाह समवर्षों में तथा पुत्र का विवाह विषम वर्षों में शुभ होता है। विपरीत वर्षों में विवाह करने से दुख तथा रोग होते हैं ॥ १ ॥

विवाह में विहित मास—

दिनाधिपे मेषवृषालिकुम्भमृगुग्मनकाख्यघटर्भसंस्थे ।
माघद्वये माधवशुक्रयोश्च मुख्योऽथवा कार्त्तिकमार्गयोश्च ॥ २ ॥

मेष, वृष, वृश्चिक, कुम्भ मिथुन और मकर राशि में सूर्य के रहने पर माघ, फाल्गुन, वैशाख, ज्येष्ठ, कार्त्तिक तथा अग्रहण महीने में विवाह शुभ होता है ॥२॥

शुभाशुभ तिथि—

प्रतिपद् दुःखजननी द्वितीया प्रीतिवर्द्धिनी ।
तृतीयायां च सौभाग्यं चतुर्थी धननाशिनी ॥ ३ ॥
पञ्चम्यां सुखवित्तानि षष्ठी विघ्नप्रदायिनी ।
विद्याशीलसुखाप्तिः स्यात् सप्तम्यामफलाऽष्टमी ॥ ४ ॥
नवमी शोकदा प्रोक्ता आनन्दो दशमी दिने ।
सुखमेकादशी ज्ञेया सफला द्वादशी स्मृता ॥ ५ ॥
मानपुत्रा त्रयोदश्यां चतुर्दश्यां तु दोषदा ।
फलं बहुविधं नित्यं पञ्चदश्यां विशेषतः ॥ ६ ॥
अमायां चैव रिक्तायां करणे विष्टिसंज्ञके ।
यः करोति विवाहं च शीघ्रं याति यमालयम् ॥ ७ ॥

प्रतिपद् में दुःख, द्वितीया में प्रीति, तृतीया में सौभाग्य, चतुर्थी में धननाश, पञ्चमी में सुख और धन, षष्ठी में विघ्न, सप्तमी में विद्याशील और सुख की प्राप्ति, अष्टमी में निष्फल, नवमी में शोक, दशमी में आनन्द, एकादशी में सुख, द्वादशी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में फल की सिद्धि, त्रयोदशी में मान और पुत्र की प्राप्ति, चतुर्दशी में कष्ट, पूर्णिमा में बहुविध सुख की प्राप्ति तथा अमावास्या, रिक्ता या भद्रा में विवाह करने से शीघ्र मृत्यु होती है ॥ ३-७ ॥

विवाह में शुभाशुभ नक्षत्र—

सौम्यपित्र्यर्क्षहस्ताश्च मैत्रनैर्ऋतिवायवः ।
त्रीण्युत्तराणि पौष्णं च रोहिणी शोभनप्रदा ॥ ८ ॥
अन्याः सर्वा विवर्ज्याः स्युस्ताराः परिणये सदा ॥ ९ ॥

सौम्य संज्ञक, मघा, हस्त, अनुराधा, मूल, स्वाती, तीनों उत्तरा, रेवती और रोहिणी नक्षत्रों में विवाह शुभ होता है। शेष नक्षत्रों में विवाह नहीं करना चाहिये ॥ ८-९ ॥

दिनवश शुभाशुभ—

गुरुशुक्रेन्दुपुत्राणां दिनेषु परिणीयते ।
या कन्या सा भवेन्नित्यं भर्त्तुश्चित्तानुवर्तिनी ॥ १० ॥
अर्कार्किभौमवाराणां दिनेषु कलहप्रिया ।
सापत्न्यं समवाप्नोति तुषारकरवासरे ॥ ११ ॥

गुरु, शुक्र और बुध दिनों में विवाह करने से कन्या पति की मनोनुकूला; रवि, शनि और मङ्गल दिन में विवाह करने से कलहकारिणी तथा सोमवार को विवाह करने से सौतवाली होती है ॥ १०-११ ॥

गुरु आदि की शुद्धि का प्रयोजन—

गुरुशुद्धिवशेन कन्यकानां समवर्षेषु षडब्दकोपरिष्टात् ।
रविशुद्धिवशाच्छुभो वराणामुभयोश्चन्द्रविशुद्धितोविवाहः ॥ १२ ॥

गुरु की शुद्धि होने पर कन्या का ६ वर्ष के ऊपर सम वर्षों में; रवि शुद्धि से वर का तथा कन्या और वर दोनों का चन्द्र शुद्धि से विवाह शुभ होता है ॥१२॥

गुरु शुद्धि—

वटुकन्याजन्मराशेस्त्रिकोणायद्विसप्तगः ।
श्रेष्ठो गुरुः खषट्त्र्याद्ये पूजयान्यत्र निन्दितः ॥ १३ ॥

वर और कन्या की जन्म राशि से नवम, पञ्चम, एकादश, द्वितीय और सप्तम स्थान में गुरु श्रेष्ठ; दशम, तृतीय, षष्ठ और प्रथम इन स्थानों में होने पर शान्ति करने से शुभ तथा चतुर्थ, अष्टम और द्वादश में हों तो अशुभ होते हैं ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रवि शुद्धि—

जन्मराशेस्त्रिषष्ठायदशमेषु रविः शुभः।
पश्चात् त्रयोदशांशेभ्यो द्विपञ्चनवमेष्वपि ॥ १४ ॥

जन्म राशि से यदि सूर्य तृतीय, षष्ठ, दशम और एकादश में स्थित हो, तो शुभ; द्वितीय, पञ्चम तथा नवम राशि में १३ अंश से अधिक होने पर शुभ तथा शेष राशियों में अशुभ होता है ॥ १४ ॥

चन्द्र शुद्धि—

जन्मराशेस्त्रिषष्ठाद्य सप्तमायखसंस्थितः।
शुभश्चन्द्रो त्रिकोणस्थः शुक्ले चाऽन्यत्र निन्दितः ॥ १५ ॥

जन्मकालिक राशि से यदि चन्द्रमा तृतीय, षष्ठ, प्रथम, सप्तम, दशम और एकादश स्थान में हो तो शुभ; शुक्ल पक्ष में द्वितीय, पञ्चम और नवम में भी शुभ तथा चतुर्थ, अष्टम और द्वादश में अशुभ होते हैं ॥ १५ ॥

गुरु, सूर्य की शान्ति—

अशुभस्थानगे सूर्ये दद्याद्धेनुं सदक्षिणां।
हाटकं वसनं पीतं दद्याद्दुष्टे बृहस्पतौ ॥ १६ ॥

यदि सूर्य अशुभ हो तो दक्षिण के साथ गौदान तथा गुरु अशुभ हो तो स्वर्ण सहित पीत वस्त्र का दान करना चाहिये ॥ १६ ॥

यहाँ पर विशेष—

अनिष्टस्थानसंस्थोऽपि लग्नात्क्रूरो न दोषकृत्।
बुधभार्गवजीवैश्चेद् दृष्टः केन्द्रत्रिकोणगैः ॥ १७ ॥
पापाः भवन्ति सौम्याः सौम्याः द्विगुणं फलं दद्युः ॥

यदि लग्न से अनिष्ट स्थान में पापग्रह भी हों तो उन पर केन्द्र या त्रिकोण स्थित बुध, शुक्र या गुरु की दृष्टि होने से वे दोषकारक नहीं होते। अपरञ्च पापग्रह शुभ तथा शुभग्रह द्विगुणित शुभ फल दायक होते हैं ॥ १७ ॥

वर वरण (तिलक) मुहूर्त—

वरवृत्ति शुभे काले गीतवाद्यादिभिर्युतः।
ध्रुवभे कृत्तिकापूर्वाः कुर्याद्वापि विवाहभे ॥ १८ ॥
उपवीतं फलं पुष्पं वासांसि विविधानि च।
देयं वराय वरणे कन्याभ्रात्रा द्विजेन वा ॥ १९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कन्या के सहोदर भाई या कोई ब्राह्मण को शुभ मुहूर्त्त में गीत, वाद्य से युक्त होकर ध्रुवसंज्ञक, कृत्तिका, तीनों पूर्वा तथा विवाह में विहित नक्षत्रों में यज्ञोपवीत, फल, पुष्प तथा अनेक प्रकार के वस्त्र, रत्न आदि से युक्त होकर वर का वरण करना चाहिये ॥ १८–१९ ॥

कन्यावरण—

पूर्वात्रयश्रवणमित्रभवैश्वदेवहौताशवासवसमीरणदैवतेषु ।
द्राक्षाफलेषु कुसुमाक्षतपूर्णपाणिरश्रान्तशान्तहृदयो वरयेत्कुमारीम् ।२०।

तीनों पूर्वा, श्रवण, अनुराधा, उत्तराषाढ़ा, ज्येष्ठा, धनिष्ठा, स्वाती और विशाखा नक्षत्रों में फल, पुष्प, अक्षत से पूर्ण अञ्जलिबद्ध होकर शान्तिपूर्वक कन्या का वरण करना चाहिये ॥ २० ॥

मङ्गली—

लग्ने व्यये चतुर्थे च सप्तमे वाष्टमे कुजः ।
भर्त्तारं नाशयेद्भार्या भर्त्ता भार्यां विनाशयेत् ॥ २१ ॥

यदि स्त्री की कुण्डली में लग्न, द्वादश, चतुर्थ, सप्तम या अष्टम भावों में मङ्गल हो तो स्वामी का तथा पुरुष की कुण्डली में हो तो स्त्री का नाशकारक होता है ॥२१॥

उक्त दोष का परिहार—

सप्तमे च यदा सौरिर्लग्ने वापि चतुर्थके ।
नवमे द्वादशे चैव तदा भौमो न दोषकृत् ॥ २२ ॥

यदि शनि सप्तम, लग्न, चतुर्थ, नवम या द्वादश भाव में हो तो मङ्गल जनित दोष नहीं होता ॥ २२ ॥

वर-कन्या मेलापक में विचारणीय—

वर्णो वश्यं तथा तारा योनिश्च ग्रहमैत्रकम् ।
गणकूटं भकूटं च नाडी चैते गुणाधिका ॥ २३ ॥

वर्ण, वश्य, तारा, योनि, ग्रहमैत्री, गणकूट, भकूट और नाड़ीकूट ये आठ प्रकार के कूट क्रम से एक एक गुण अधिकहोते हैं। जैसे—वर्ण में एक, वश्य में दो, तारा में तीन, योनि में चार, ग्रहमैत्री में पाँच, गणमैत्री में छः, भकूट में सात और नाड़ीकूट में आठ इस प्रकार कुल ३६ गुण होते हैं ॥ २३ ॥

वर्णकूट—

द्विजा झषालिकर्कटास्ततो नृपा विशोऽङ्घ्रिजाः ।
वरस्य वर्णतोऽधिका वधूर्न शस्यते बुधैः ॥ २४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कर्क, मीन और वृश्चिक ब्राह्मण; मेष, सिंह और धनु क्षत्रिय; वृष, कन्या और मकर वैश्य तथा मिथुन, तुला और कुम्भ शूद्र वर्ण होते हैं। वर-कन्या की राशि से वर्ण का मिलान कर वर के वर्ण से यदि कन्या का वर्ण गुण अधिक हो तो वह प्रशस्त नहीं होता, किन्तु सम या हीन होने से प्रशस्त होता है ॥ २४ ॥

वर्ण चक्र—

वर्ण	ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
राशि	कर्क वृश्चिक मीन	मेष सिंह धनु	वृष कन्या मकर	मिथुन तुला कुम्भ

वर्णगुण चक्र—

वर		ब्रा.	क्ष.	वै.	शू.
कन्या	ब्रा.	१	०	०	०
	क्ष.	१	१	०	०
	वै.	१	१	१	०
	शू.	१	१	१	१

वश्य कूट—

हित्वा मृगेन्द्रं नरराशिवश्याः सर्वे तथैषां जलजास्तु भक्ष्याः।
सर्वेऽपि सिंहस्य वशे विनालिं ज्ञेयं नराणां व्यवहारतोऽन्यत् ॥ २५ ॥

सिंह को छोड़ सब राशियां नर राशि के वश्य होते हैं तथा जलचर राशि भक्ष्य हैं। वृश्चिक को छोड़ सब राशि सिंह के वश्य हैं। अन्यत्र मनुष्यों को व्यवहार से राशियों के वश्यावश्य को जानना चाहिये ॥ २५ ॥

वश्य चक्र—

संज्ञा	जलचर	चतुष्पद	द्विपद	वनचर	कीट
राशि	कर्क मकर- उत्तरार्द्ध मीन	मेष, वृष, धनु- उत्तरार्द्ध मकर- पूर्वार्द्ध	मिथुन कन्या तुला धनु- पूर्वार्द्ध कुम्भ	सिंह	वृश्चिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	वर	जलचर	चतुष्पद	द्विपद	वनचर	कीट
कन्या	जलचर	२	१	॥	१	२
	चतुष्पद	१	२	१	॥	०
	द्विपद	१	१	२	०	०
	वनचर	२	०	०	२	०
	कीट	१	१	०	०	२

ताराकूट—

कन्यर्क्षाद्वरभं यावत् कन्याभं वरभादपि।
गणयेन्नवहृच्छेषे त्रीण्वद्रिभमसत्स्मृतम् ॥ २६ ॥

कन्या के नक्षत्र से वर के नक्षत्र पर्यन्त तथा वर के नक्षत्र से कन्या के नक्षत्र पर्यन्त गिनकर ९ का भाग देने से यदि तीन, पांच या सात शेष बचे तो अशुभ तथा एक, दो, चार, छः, आठ या नौ शेष बचे तो शुभ कहना चाहिये ॥ २६ ॥

तारागुण—

एकतो लभ्यते तारा शुभा चैवाशुभान्यतः।
तदो सार्धो गुणश्चैव ताराशुद्ध्या मिथस्त्रयः ॥ २७ ॥
उभयोर्न शुभा तारा तदा शून्यं समादिशेत् ॥ २८ ॥

एक का तारा शुभ और दूसरे का अशुभ हो तो डेढ़, दोनों का शुभ हो तो तीन तथा दोनों का अशुभ हो तो शून्य गुण होता है ॥ २७–२८ ॥

(कोष्ठक, पृष्ठ ४१ पर देखें)

योनिकूट—

अश्विन्यम्बुपयोर्हयो निगदितः स्वात्यर्कयोः कासरः।
सिंहो वस्वजपाद्भयोः समुदितो याम्यान्त्ययोः कुञ्जरः ॥ २९ ॥
मेषो देवपुरोहितानलभयोः कर्णाम्बुनोर्वानरः।
स्याद्वैश्वाभिजितोस्तथैव नकुलश्चान्द्राब्जयोन्योरहिः ॥ ३० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तारागुणबोधकचक्र—

वर तारा	१	२	३	४	५	६	७	८	९
कन्या तारा १	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
२	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
३	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
४	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
५	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
६	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
७	१॥	१॥	०	१॥	०	१॥	०	१॥	१॥
८	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३
९	३	३	१॥	३	१॥	३	१॥	३	३

ज्येष्ठामैत्रभयोः कुरङ्ग उदितो मूलार्द्रयोः श्वा तथा।
मार्जारोऽदितिसार्पयोरथ मघायोन्योस्तथैवोन्दुरुः ॥ ३१ ॥
व्याघ्रो द्वीशभचित्रयोरपि च गौरार्यम्णावुभ्यर्क्षयो-
र्योनिः पादगयोः परस्परमहावैरं भयोन्योर्भवेत् ॥ ३२ ॥

अश्विनी और शतभिषा की अश्व, स्वाती और हस्त की महिष, धनिष्ठा और पूर्वभाद्रपदा की सिंह, भरणी और रेवती की हस्ती, पुष्प और कृत्तिका की मेष, श्रवण और पूर्वाषाढ़ा की वानर, उत्तराषाढ़ा और अभिजित् की नकुल, मृगशिरा और पूर्वाफाल्गुनी की सर्प, ज्येष्ठा और अनुराधा की मृग, मूल और आर्द्रा की श्वान, पुनर्वसु और अश्लेषा की मार्जार, मघा और पूर्वफाल्गुनी की मूषक, विशाखा और चित्रा की व्याघ्र तथा उत्तराफाल्गुनी और उत्तराभाद्रपदा की गौ योनि होती है। श्लोक के दो चरणों में पठित दो-दो योनियों में परस्पर महावैर होता है, इसलिये इन्हें छोड़ देना चाहिये ॥ २९-३२ ॥

योनिगुण—

महावैरे च वैरे च स्वभावे च यथाक्रमं।
मैत्रे चैवातिमैत्रे च खैकद्वित्रिचतुर्गुणाः ॥ ३३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर और कन्या के परस्पर महावैर योनि में शून्य, वैर में एक, सम में दो, मैत्री में तीन और अति मैत्री में चार गुण होते हैं ॥ ३३ ॥

योनि चक्र—

योनि	नक्षत्र	योनि	नक्षत्र	महावैर
अश्व	अश्वि., शत.	महिष	हस्त, स्वाती	,,
गज	भ., रे.	सिंह	ध., पू. भा.	,,
मेष	कृत्ति., पुष्य	वानर	पू. षा., श्रव.	,,
सर्प	रोहि., मृग.	नकुल	उ. षा., अभि.	,,
श्वान	आर्द्रा, मूल	मृग	अनु., ज्येष्ठा	,,
मार्जार	पुन., अश्ले.	मूषक	मघा, पू. फा.	,,
गौ	उ. फा., उ. भा.	व्याघ्र	चित्रा, विशा.	,,

(योनिगुण चक्र, कोष्टक, पृष्ट ४३ पर देखें)

ग्रहमैत्री गुण—

ग्रहमैत्रं सप्तविधं गुणाः पञ्च प्रकीर्त्तिताः ।
तत्रैकाधिपतित्वे च मित्रत्वे गुणपञ्चकम् ॥ ३४ ॥
चत्वारः सममित्रत्वे द्वयोः साम्ये त्रयो गुणाः ।
मित्रवैरे गुणश्चैकः समवैरे गुणार्द्धकम् ॥ ३५ ॥
परस्परं खेटवैरे गुणशून्यं विनिर्दिशेत् ।
असन्धे सममित्रादौ व्येका ग्राह्या यथोदिताः ॥ ३६ ॥

ग्रहमैत्री कूट सात प्रकार के होते हैं और इनमें पाँच गुण होते हैं। वर और कन्या की राशि में एकाधिपत्य या मैत्रित्व होने पर पाँच, सम मैत्री होने पर चार, सम होने पर तीन, मित्र-शत्रुत्व होने पर एक, सम-शत्रुत्व होने पर आधा तथा परस्पर शत्रुता होने पर शून्य गुण होता है। सम-मित्रादि होने पर भी यदि दुष्ट राशि में हो, तो विहित गुण में एक घटाकर ग्रहण करना चाहिये ॥ ३४-३६ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

योनिगुण चक्र—

कन्या \ वर	अश्व	गज	मेष	सर्प	श्वान	मार्जार	मूषक	गौ	महिष	व्याघ्र	मृग	वानर	नकुल	सिंह
अश्व	४	२	३	२	२	२	२	३	०	१	३	२	२	१
गज	२	४	३	२	२	२	२	२	३	२	२	३	२	०
मेष	३	३	४	३	२	३	२	३	३	१	३	०	३	१
सर्प	२	२	३	४	२	२	१	१	२	२	२	२	०	२
श्वान	२	२	२	२	४	१	१	२	२	१	०	२	२	१
मार्जार	२	२	३	२	१	४	०	२	२	१	२	२	२	२
मूषक	२	२	२	१	१	०	४	२	२	२	२	२	२	१
गौ	३	२	३	१	२	२	२	४	३	०	३	२	३	१
महिष	०	३	३	२	२	२	२	३	४	१	२	२	२	३
व्याघ्र	१	२	१	२	१	१	२	०	१	४	१	१	२	२
मृग	३	२	३	२	०	२	२	३	२	१	४	२	२	२
वानर	२	३	०	२	२	२	२	२	२	१	२	४	२	३
नकुल	२	२	३	०	२	२	२	३	२	२	२	२	४	३
सिंह	१	०	१	२	१	२	१	१	२	२	२	३	२	४

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रसङ्ग वश ग्रहों की मैत्री आदि—

शत्रू मन्दसितौ समश्च शशिजो मित्राणि शेषा रवे-
स्तीक्ष्णांशुर्हिमरश्मिजश्च सुहृदौ शेषाः समाः शीतगोः।
जीवेन्दूष्णकराः कुजस्य सुहृदो ज्ञोऽरिः सितार्की समौ,
मित्रे सूर्यसितौ बुधस्य हिमगुः शत्रुः समाश्चापरे ॥ ३७ ॥
सूरेः सौम्यसितावरी रविसुतो मध्योऽपरे त्वन्यथा,
सौम्यार्की सुहृदौ समौ कुजगुरू शुक्रस्य शेषावरी।
शुक्रज्ञौ सुहृदौ समः सुरगुरुः सौरस्य चान्येऽरयोः ॥ ३८ ॥

रवि के शुक्र और शनि शत्रु, बुध सम तथा शेष चन्द्र, मङ्गल और गुरु मित्र हैं। चन्द्रमा के रवि और बुध मित्र, तथा शेष मङ्गल, गुरु, शुक्र और शनि सम हैं, इसका शत्रु कोई नहीं है। मङ्गल के गुरु, चन्द्र और रवि मित्र, बुध शत्रु तथा शुक्र और शनि सम हैं। बुध के सूर्य और शुक्र मित्र, चन्द्र शत्रु तथा शेष मङ्गल, गुरु और शनि सम हैं। गुरु के बुध और शुक्र शत्रु, शनि सम तथा शेष रवि, चन्द्र और मङ्गल मित्र हैं। शुक्र के बुध और शनि मित्र, मङ्गल और गुरु सम तथा शेष रवि और चन्द्र शत्रु हैं। शनि के शुक्र और बुध मित्र, गुरु सम तथा रवि, चन्द्र और मङ्गल शत्रु हैं ॥ ३७–३८ ॥

मित्रादि चक्र—

ग्रह	सूर्य	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
मित्र	चन्द्र मङ्गल गुरु	रवि बुध	रवि चन्द्र गुरु	रवि शुक्र	रवि चन्द्र मङ्गल	बुध शनि	शुक्र बुध
सम	बुध	मङ्गल शुक्र शनि गुरु	शुक्र शनि	मङ्गल गुरु शनि	शनि	मङ्गल गुरु	गुरु
शत्रु	शनि शुक्र	×	बुध	चन्द्र	बुध शुक्र	रवि चन्द्र	रवि चन्द्र मङ्गल

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्रहमैत्री गुण—

वर	रवि	चन्द्र	मङ्गल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
कन्या रवि	५	५	५	४	५	०	०
चन्द्र	५	५	४	१	४	॥	॥
मङ्गल	५	४	५	॥	५	३	॥
बुध	४	१	॥	५	॥	५	४
गुरु	५	४	५	॥	५	॥	३
शुक्र	०	॥	३	५	॥	५	५
शनि	०	॥	॥	४	३	५	०

गणकूट—

रक्षोनरामरगणाः क्रमतो मघाहि चस्विन्द्रमूलवरुणानलतक्षराधाः।
पूर्वोत्तरात्रयविधातृयमेशभानि मैत्रादितीन्दुहरिपौष्णमरुल्लघूनि ॥३९॥

मघा, श्लेषा, धनिष्ठा, मूल, शतभिषा, कृत्तिका, चित्रा और विशाखा राक्षसगण; तीनों पूर्वा, तीनों उत्तरा, रोहिणी, भरणी, और आर्द्रा मनुष्यगण तथा अनुराधा, पुनर्वसु, मृगशिरा, श्रवण, रेवती, स्वाती, हस्त, पुष्य, अश्विनी और अभिजित ये देवगण होते हैं ॥ ३९ ॥

गणबोधक चक्र—

देव	मनुष्य	राक्षस
अश्विनी, मृग, पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, स्वाती, अनुराधा, श्रवण, रेवती	भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पू. फा., उ. फा., पू. षा. उ. षा., पू. भा.; उ. भाद्रपदा	कृत्तिका, अश्लेषा, मघा, चित्रा; विशाखा, ज्येष्ठा, मूल, धनिष्ठा, शतभिषा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गणकूट गुण—

स्वगणे षड्गुणाः प्रोक्ताः पञ्च देवमनुष्ययोः ।
देवराक्षसयोश्चैकः शून्यं मनुजरक्षसोः ॥ ४० ॥

अपने गण में छः, देव और नर गण में पाँच, देव और राक्षस गण में एक तथा नर और राक्षस गण में शून्य गुण होता है ॥ ४० ॥

गणकूट गुणबोधक चक्र—

वर		देव	नर	राक्षस
कन्या	देव	६	५	१
	नर	५	६	०
	राक्षस	१	०	६

भकूट—

मृत्युः षडष्टके ज्ञेयाऽपत्यहानिर्नवात्मजे ।
द्विर्द्वादशे निर्धनत्वं तयोरन्यत्र सौख्यकृत् ॥ ४१ ॥

वर कन्या की राशि से गणना करने पर एक से दूसरी छठे या आठवें में पड़े तो मृत्यु, पाचवें या नवें में पड़े तो सन्तान हानि तथा दूसरे या द्वादश में पड़े तो दरिद्रता होती है ॥ ४१ ॥

भकूट गुण—

सत्कूटे (षट्काष्टकद्विर्द्वादशनवपञ्चकरहिते)
सप्तः चरणैक्ये च गुणाभावः ॥ ४२ ॥

अच्छे कूट में सात गुण तथा चरणैक्य होने से शून्य गुण होता है ॥ ४२ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भकूटगुण चक्र—

वर	मे.	वृ.	मि.	क.	सिं.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कु.	मी.
कन्या मे.	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०
वृ.	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७
मि.	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०	७
क.	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०	०
सिं.	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७	०
क.	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०	७
तु.	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०	०
वृ.	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७	०
ध.	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७	७
म.	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०	७
कु.	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७	०
मी.	०	७	७	०	०	७	०	०	७	७	०	७

नाड़ीकूट—

ज्येष्ठारौद्रार्यमाम्भः पतिभयुगयुगं दास्रभं चैकनाड़ी।
पुष्यन्दुत्वाष्ट्रमित्राम्तकवसुजलभं योनिवुध्न्ये च मध्या ॥ ४३ ॥
वाय्वग्निव्यालविश्वोडुयुगयुगमथो पौष्णभं चापरा स्या
द्वम्पत्योरेकनाड्यां परिणयनमसन्मध्यनाड्यां च मृत्युः ॥ ४४ ॥

ज्येष्ठा, आर्द्रा, मूल, पुनर्वसु, उत्तराफाल्गुनी, हस्त, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपदा और अश्विनी की आदि पुष्य, मृगशिरा, चित्रा, अनुराधा, भरणी, धनिष्ठा, पूर्वाषाढ़ा, पूर्व फाल्गुनी और उत्तरभाद्रपदा की मध्य तथा स्वाती, विशाखा, कृत्तिका, रोहिणी, अश्लेषा, मघा, उत्तराषाढ़ा, श्रवण और रेवती की अन्त्य नाड़ी होती है।

दम्पति का एक नाड़ी में विवाह अशुभ तथा मध्य नाड़ी में विवाह मृत्युकारक होता है ॥ ४३–४४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नाड़ीगुण—

नाड़ीभेदेऽष्टौ गुणाः, नाड्यैके सर्वथा त्याज्यम् ॥ ४५ ॥

पृथक्-पृथक् नाड़ी के होने से आठ गुण होते है। एक नाड़ी सर्वथा त्याज्य है ॥ ४५ ॥

नाड़ीबोधक चक्र—

आदि	ज्येष्ठा	आर्द्रा	मूल	पुनर्वसु	उ.फा.	हस्त	शत.	पू.भा.	अश्वि.
मध्य	पुष्य	मृग.	चित्रा	अनु.	भरणी	धनि.	पू.षा.	पू.फा.	उ.भा.
अन्त्य	स्वाती	विशा.	कृत्ति.	रोहि.	अश्ले.	मघा	उ.षा.	श्रवण	रेवती

नाड़ीगुण चक्र—

वर		आ.	म.	अ.
कन्या	आदि	०	८	८
	मध्य	८	०	८
	अन्त्य	८	८	०

प्रशस्तादि गुण संख्या—

अशुभोऽष्टादशाल्पश्चेत् शुभोऽष्टादशतोऽधिकः।
शुभोऽतिगुणयोगश्चेत्सप्तविंशतितोऽधिकः ॥ ४६ ॥

पूर्वोक्त वर्णित कूटों के गुणों का योग यदि अट्ठारह से अल्प हो तो अशुभ, अट्ठारह से अधिक हो तो शुभ तथा सत्ताईस से अधिक हो तो अत्यन्त शुभ होता है ॥ ४६ ॥

ब्राह्मण आदि वर्णों के दोषविशेष—

नाड़ी दोषोऽस्ति विप्राणां वर्णदोषोऽस्ति भूभुजाम्।
वैश्यानां गणदोषः स्यात् शूद्राणां योनिदूषणम् ॥ ४७ ॥

नाड़ीदोष ब्राह्मणों को, वर्णदोष क्षत्रियों को, गणदोष वैश्यों को तथा योनि-दोष शूद्रों को विशेष रूप से लगता है ॥ ४७ ॥

दोषों का परिहार—

राश्यैक्येचेद्भिन्नमृक्षं द्वयोः स्यान्नक्षत्रैक्ये राशियुग्मं तथैव।
नाड़ीदोषो नो गणानां न दोषो नक्षत्रैक्ये पादभेदे शुभं स्यात् ॥४८॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर और कन्या की राशि एक और नक्षत्र भिन्न अथवा नक्षत्र एक और राशि भिन्न हो तो नाड़ी और गुणदोष नहीं लगता है। नक्षत्र-ऐक्य में चरण की भिन्नता होने से शुभ होता है ॥ ४८ ॥

लग्न से शुभाशुभ

जारसक्ता क्रिये लग्ने वृत्तिभ्रष्टा वृषोदये।
कुलद्वये शुभा प्रोक्ता तथा च मिथुनोदये ॥ ४९ ॥
नृशंसा कुलटा कर्के सिंहे वन्ध्या सकृत्प्रसूः।
पतिश्वशुरयोः प्रीता कन्यायां सुरतप्रिया ॥ ५० ॥
तुलोदये धनाढ्या स्याद् वृश्चिके नित्यमास्थिता।
कुलटा चापपूर्वार्द्धे प्रौढ़ा चातिसती परे ॥ ५१ ॥
परशक्ता मृगे कुम्भे मीने दुश्चारिणी द्वयोः।
बलिनो राशयः सर्वे यथाप्रोक्तफलप्रदाः ॥ ५२ ॥

यदि कन्या का विवाह मेष लग्न में हो तो परपुरुष में आसक्ता, वृष में हो तो वृत्तिभ्रष्टा, मिथुन लग्न में हो तो दोनों कुल में श्रेष्ठ, कर्क में हो तो नृशंस और कुलटा सिंह में हो तो वन्ध्या या सकृत्प्रसूता, कन्या में हो तो पति और श्वसुर की प्रिय और सुरतप्रिया, तुला में हो तो धनाढ्या, वृश्चिक में हो तो भक्तियुक्ता, धनु के पूर्वार्द्ध में हो तो कुलटा और उत्तरार्द्ध में हो तो सती, मकर में हो तो दूसरे में आसक्ता तथा कुम्भ और मीन में हो तो दुश्चरित्रा होती है। राशियों के बलवान् होने से यथोक्त फल कारक होते हैं ॥ ४९-५२ ॥

विशेष—

केन्द्रे कोणे द्वितीये च तृतीये च शुभग्रहाः।
पापास्त्रिषष्ठलाभेषु स्थिताः श्रेष्ठफलप्रदाः ॥ ५३ ॥

विवाह लग्न से यदि शुभग्रह प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, सप्तम, नवम और दशम स्थानों में तथा पापग्रह तृतीय, षष्ठ और एकादश स्थानों में हो तो शुभ कारक होते हैं ॥ ५३ ॥

विवाह-लग्न में त्याज्य—

त्याज्या लग्नेऽव्ययो मन्दात् षष्ठे शुक्रेन्दुलग्नपाः।
रन्ध्रे चन्द्रादयः पञ्च सर्वेऽस्तेऽब्जगुरू समौ ॥ ४५ ॥
सभानुरिन्दुः शशिजश्चतुर्थे गुरुः सुते भूमिसुतः कुटुम्बे।
भृगुः सपत्ने रविजः कलत्रे विलग्नतस्ते विफला भवन्ति ॥ ५५ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि से लेकर चार ग्रह अर्थात् शनि, राहु, केतु और रवि लग्न में वर्जित करना चाहिये। शुक्र, चन्द्र तथा लग्नेश षष्ठ स्थान में, चन्द्र, मङ्गल, बुध, गुरु और शुक्र अष्टम स्थान में, सब ग्रह सप्तम स्थान में तथा चन्द्र और गुरु सम स्थानों में वर्ज्य हैं। सूर्य सहित चन्द्रमा, चतुर्थ बुध, पञ्चम गुरु, द्वितीय मङ्गल, षष्ठ शुक्र तथा सप्तम शनि यदि लग्न में हो तो लग्नभङ्ग दोष होता है॥ ५४-५५॥

तीन ज्येष्ठ का निषेध—

द्वौ ज्येष्ठौ मध्यमौ प्रोक्तौ एकज्येष्ठः शुभावहः।
ज्येष्ठत्रये न कुर्वीत विवाहं सर्वसम्मतम्॥ ५६॥

वर, कन्या और ज्येष्ठ मास इन तीनों में दो ज्येष्ठ हो तो मध्यम, एक ज्येष्ठ हो तो शुभ और तीनों ज्येष्ठ हों तो विवाह नहीं करना चाहिये॥ ५६॥

वर्जित मासादि—

जन्ममासर्क्षवारेषु पित्रोः श्राद्धतिथौ तथा।
ज्येष्ठापत्यस्य च ज्येष्ठे विवाहं परिवर्जयेत्॥ ५७॥

जन्ममास, जन्म-नक्षत्र, जन्मदिन, माता-पिता के श्राद्ध दिन और ज्येष्ठ सन्तान का ज्येष्ठ मास में विवाह नहीं करना चाहिये॥ ५७॥

वर्ज्य गण्डान्तादि—

ज्येष्ठापौष्णभसार्पभान्त्यघटिकायुग्मं च मूलाश्विनी,
पित्र्यादौ घटिकाद्वयं निगदितं तद्भस्य गण्डान्तकम्।
कर्काल्यण्डजभान्ततोऽर्धघटिका सिंहाश्वमेषादिगा
पूर्णान्ते घटिकात्मकं त्वशुभदं नन्दातिथेश्चादिमम्॥ ५८॥

ज्येष्ठा, रेवती और अश्लेषा की अन्त्य की तथा मूल, अश्विनी और मघा की आरम्भ की दो घटी नक्षत्र गण्डान्त; कर्क, वृश्चिक और मीन की अन्त्य की तथा सिंह, धनु और मेष की आरम्भ की आधी घटी राशि गडान्त तथा पूर्णा तिथि की अन्त्य की और नन्दा तिथि की आदि की एक घटी तिथि गडान्त होती है। इनमें विवाह शुभ नहीं होता॥ ५८॥

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां विवाहप्रकरणाख्यो दशमः॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मुहूर्त्तप्रकरणम्

वधूप्रवेश—

समाद्रिपञ्चाङ्कदिने विवाहाद्वधूप्रवेशोऽष्टिदिनान्तराले।
शुभः परस्ताद्विषमाब्दमासदिनेऽक्षवर्षात्परतो यथेष्टम् ॥ १ ॥

विवाह से १६ दिन के भीतर सम अथवा चौथे, पाँचवें या नवें दिन में वधू प्रवेश शुभ है। यदि सोलह दिन के भीतर न हो सके तो विषम वर्ष, विषम मास या विषम दिन में वधू प्रवेश शुभ होता है। यदि पाँच वर्ष से अधिक हो जाय तो इच्छानुसार शुभ समय में वधू प्रवेश शुभ होता है ॥ १ ॥

वधूप्रवेश में शुभाशुभ—

ध्रुवक्षिप्रमृदुगोत्रवसुमूलमघानिले ।
वधूप्रवेशः सन्नेष्टो रिक्तारार्के बुधे परे ॥ २ ॥

ध्रुव, क्षिप्र, मृदु, श्रवण, धनिष्ठा, मूल, मघा और स्वाती नक्षत्रों में, रिक्ता के अतिरिक्त तिथियों में तथा रवि और मङ्गल वारों को छोड़कर शेष वारों में वधू प्रवेश शुभ है। किन्हीं आचार्यों के मत से बुधवार में भी वधू प्रवेश शुभ नहीं होता है ॥ २ ॥

और भी—

हस्तद्वये ब्रह्मयुगे मघायां पुष्ये धनिष्ठाश्रवणोत्तरेषु।
मूलानुराधाश्वरेवतीषु स्थिरेषु लग्नेषु वधूप्रवेशः ॥ ३ ॥

हस्त, चित्रा, रोहिणी, मृगशिर, मघा, पुष्य, धनिष्ठा, श्रवण, तीनों उत्तरा, मूल, अनुराधा, अश्विनी और रेवती नक्षत्रों में तथा स्थिर लग्न में वधू प्रवेश शुभ है ॥ ३ ॥

द्विरागमन मुहूर्त्त

चरेदथौजहायने घटालिमेषगे रवौ
रवीज्यशुद्धियोगतः शुभग्रहस्य वासरे।
नृयुग्ममीनकन्यकातुलावृषे विलग्नके
द्विरागमं लघुध्रुवे चरेऽत्रपे मृदूडुनि ॥ ४ ॥

विषम वर्षों में, प्रथम, अष्टम और एकादश राशि के सूर्य में, गुरु की शुद्धि में, शुभग्रहों के वार में, तृतीय, द्वादश, षष्ठ, सप्तम और द्वितीय लग्नों में, लघु, ध्रुव, चर, मूल तथा मृदु संज्ञक नक्षत्रों में द्विरागमन शुभ होता है ॥ ४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ष व्यवस्था—

धनं हानिः सुखं नाशो भोगो वैरं ततः सुखम् ।
प्रथमाब्दात् फलं ज्ञेयं क्रमाद्वध्वा द्विरागमे ॥ ५ ॥
श्वश्रूं हन्त्यष्टमे वर्षे श्वशुरं च दशाब्दके ।
सम्प्राप्ते द्वादशे वर्षे पतिं हन्ति द्विरागमे ॥ ६ ॥

विवाह से प्रथमादि वर्षों में द्विरागमन होने से क्रम से धन, हानि, सुख, नाश, भोग, वैर और सुख होता है। द्विरागमन आठवें वर्ष में होने से सास की, दशवें वर्ष में श्वसुर की तथा बारहवें वर्ष में होने से स्वामी की मृत्यु होती है ॥५-६॥

वर्जनीय—

अस्तंगते भृगोः पुत्रे तथा सम्मुखमागते ।
नष्टे जीवे निरंशे वा नैव संचालयेद्वधूम् ॥ ७ ॥

यदि शुक्र अस्त या सम्मुख हो तथा गुरु अंश हीन या अस्त हो तो द्विरागमन नहीं करना चाहिये ॥ ७ ॥

दैत्येज्यो ह्यभिमुखदक्षिणे यदि स्याद्
गच्छेयु र्नहि शिशुगर्भिणीनवोढाः ।
बालश्चेद्व्रजति विपद्यते नवोढा
चेद्वन्ध्या भवति च गर्भिणी त्वगर्भा ॥ ८ ॥

यदि शुक्र सम्मुख या दक्षिण हो तो गर्भिणी, बालक और नवविवाहिता को यात्रा नहीं करनी चाहिये। क्योंकि बालक के यात्रा करने से उसकी मृत्यु, गर्भिणी के यात्रा करने से गर्भपात तथा नवोढा के यात्रा करने से वह वन्ध्या होती है ॥ ८ ॥

दोष परिहार—

रेवत्यादि मृगान्तञ्च यावत्तिष्ठति चन्द्रमा ।
तावच्छुक्रो भवेदन्धः सम्मुखे दक्षिणे शुभः ॥ ९ ॥

चन्द्र के रेवती से मृगशिरा पर्यन्त रहने पर शुक्र अन्ध होता है। अतः इनमें सम्मुख या दक्षिण शुक्र दोष नहीं लगता ॥ ९ ॥

शुक्र अस्तादि में द्विरागमन का विधान—

अस्तेऽथवा शिशुत्वे वा बालत्वे गुरुशुक्रयोः ।
शुभो द्विरागमो यावद् वर्षमेकं विवाहितः ॥ १० ॥

गुरु और शुक्र के अस्त, बालत्व या वृद्धत्व में भी एक वर्ष के भीतर द्विरागमन करना शुभ होता है ॥ १० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गर्भाधान में विहित तिथि—

नन्दा भद्रा स्मृता पुंसि स्त्रीषु पूर्णा जया स्मृता ।
रिक्ता नपुंसके ज्ञेया तस्मात्तां परिवर्जयेत् ॥ ११ ॥

तिथियों में नन्दा और भद्रा पुरुष संज्ञक, जया और पूर्णा स्त्री संज्ञक तथा रिक्ता नपुंसक संज्ञक होती है। पुरुष और स्त्री संज्ञक तिथियों में गर्भाधान शुभ और नपुंसक संज्ञक में अशुभ होता है ॥ ११ ॥

और भी—

भद्राषष्ठीपर्वरिक्ताश्च सन्ध्याभौमार्कार्कीनाद्यरात्रीश्चतस्रः ।
गर्भाधानं त्र्युत्तरेन्द्वर्कमैत्रब्राह्मस्वातीविष्णुवस्वम्बुपे सत् ॥ १२ ॥

भद्रा, षष्ठी, पर्व दिन, रिक्ता, संध्या, मङ्गल, रवि, शनिवार तथा रजोदर्शन से प्रथम चार रात्रि गर्भाधान में वर्जित है। तीनों उत्तरा, मृगशिर, हस्त, अनुराधा, रोहिणी, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा तथा शतभिषा नक्षत्रों में गर्भाधान शुभ होता है ॥ १२ ॥

गर्भाधान में वर्ज्य—

गण्डान्तं त्रिविधं त्यजेन्निधनजन्मर्क्षं च मूलान्तकं
दास्रं पौष्णमथोपरागदिवसं पातं तथा वैधृतिम् ।
पित्रोः श्राद्धदिनं दिवा च परिघाद्यर्धं स्वपत्नीगमे
भान्युत्पातहतानि मृत्युभवनं जन्मर्क्षतः पापभम् ॥ १३ ॥

तीन प्रकार के गण्डान्त, जन्मनक्षत्र, वैनाशिक नक्षत्र (सप्तम तारा), मूल, भरणी, अश्विनी, रेवती, मघा, ग्रहण दिन, पात, वैधृति योग, माता-पिता का श्राद्ध दिन, दिन का समग्र भाग, परिघ योग का पूर्वार्द्ध, उत्पात, हत नक्षत्र, जन्म लग्न से अष्टम राशि और पापग्रह की राशि में गर्भाधान वर्जित है ॥ १३ ॥

पुंसवन मुहूर्त्त—

मूलादित्यशशाङ्कपुष्यहरिभे हस्ते च पुंवासरे,
लग्ने कुम्भनृयुग्मसिंहगुरुभे नन्दे सभद्रे तिथौ ।
मासेयुग्मतृतीयकेऽथ धवले पक्षे शुभे रात्रिपे
कुर्यात्पुंसवनं च वृद्धिसुखदं केन्द्रत्रिकोणे शुभे ॥ १४ ॥

मूल, पुनर्वसु, मृगशिर, पुष्य, श्रवण और हस्त नक्षत्रों में, पुरुष संज्ञक वारों में, कुम्भ, मिथुन, सिंह, धन और मीन लग्नों में, नन्दा और भद्रा संज्ञक तिथियों में, द्वितीय या तृतीय मास में, शुक्लपक्ष में, चन्द्र की शुद्धि में तथा शुभग्रह के केन्द्र और त्रिकोण में पुंसवन कर्म करने से वृद्धि और सुख की प्राप्ति होती है ॥ १४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सीमन्त मुहूर्त्त—

चतुर्थे सावने मासि षष्ठे वाप्यथवाष्टमे ।
अरिक्तापर्वदिवसे कुजजीवार्कवासरे ॥ १५ ॥

चतुर्थ, षष्ठ या अष्टम मास में, रिक्ता और पर्व तिथियों को छोड़कर मङ्गल, गुरु और रविवार में सीमन्त कर्म शुभ होता है ॥ १५ ॥

सीमन्त में वर्ज्य—

सीमन्तलग्नादेकोऽपि क्रूरो व्ययसुताष्टसु ।
हन्ति सीमन्तिनीं नारीं तद्गर्भं वा न संशयः ॥ १६ ॥

सीमन्त लग्न से एक भी पापग्रह व्यय, पञ्चम या अष्टम स्थानों में स्थित हो तो सीमन्तिनी स्त्री अथवा उसके गर्भ का नाश करते हैं ॥ १६ ॥

सूतिका स्नान

व्यर्कषड्वसुरिक्तेहि कुजर्केज्ये ध्रुवे करे ।
विचित्रमृदुवाताश्वे सूतिस्नानं शुभं स्मृतम् ॥ १७ ॥

द्वादशी, षष्ठी, अष्टमी और रिक्ता तिथियों को छोड़कर अन्य तिथियों में, मङ्गल, गुरु और रविवारों में, चित्रा को छोड़कर मृदु संज्ञक, स्वाती और अश्विनी नक्षत्रों में सूतिका स्नान शुभ होता है ॥ १७ ॥

सूतिका शुद्धि—

गावश्च महिषि चैव अजाश्च ब्राह्मणी तथा ।
दशाहेनैव शुद्ध्यन्ति प्रसूतिः स्याद् यदा तदा ॥ १८ ॥

गाय, भैंस, बकरी और ब्राह्मणी प्रसूति के दश दिन बाद शुद्ध होती हैं ॥१८॥

जातकर्म—

मृदुध्रुवचरक्षिप्रभेष्वेषामुदयेऽपि च ।
गुरौ शुक्रेऽथवा केन्द्रे जातकर्म च नाम च ॥ १९ ॥

मृदु, ध्रुव, चर और क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में तथा गुरु और शुक्र के केन्द्र में रहने पर जातकर्म और नामकर्म शुभ होता है ॥ १९ ॥

वर्णभेद से नामकरण—

द्वादशे दशमे वापि जन्मतोऽपि त्रयोदशे ।
षोडशे विंशती चैव द्वात्रिंशं वर्णतः क्रमात् ॥ २० ॥

जन्म से बारहवें, दशवें या तेरहवें दिन ब्राह्मण का, सोलहवें दिन क्षत्रिय का, बीसवें दिन वैश्य का और बत्तीसवें दिन शूद्र का नामकर्म करना चाहिये॥२०॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रथमादि मासों में दन्तोत्पत्ति में शुभाशुभ—

जन्मतः पञ्चमासेषु दन्तोत्पत्तिर्न शोभना।
शुभा षष्ठादिके ज्ञेया न सदन्तजनिः शुभा ॥ ५० ॥

जन्म से पाँच मास के भीतर दाँत निकलना अशुभ तथा छठे आदि महिनों में निकलना शुभ होता है। दन्त सहित बालक की उत्पत्ति शुभ नहीं होती ॥२१॥

अन्नप्राशन—

रिक्तानन्दाष्टदर्शी हरिदिवसमथो सौरिभौमार्कवारां-
लग्नं जन्मर्क्षलग्नाष्टमगृहलवगं मीनमेषालिकञ्च।
हित्वा षष्ठात्समे मास्यथ मृगदृशां पञ्चमादोजमासे
नक्षत्रैः स्यात्स्थिराख्यैः समदुलघुचरैर्बालकान्नाशनं सत् ॥ २२ ॥

रिक्ता, नन्दा, अष्टमी, द्वादशी, शनि, मङ्गल, रवि, जन्मलग्न से अष्टम स्थान, मीन, मेष और वृश्चिक लग्नों को छोड़कर पुत्र का छठे मास से सम मासों में तथा कन्या का पाँचवें मास से विषम मासों में स्थिर, मृदु, लघु और चर संज्ञक नक्षत्रों में अन्नप्राशन शुभ होता है ॥ २२ ॥

विशेष—

निष्कासनं प्राशनकर्णवेधौ क्षौरं विवादं गमनं च युद्धम्।
श्राद्धं गृहं वा कृषिभेषजौ च न जन्मभे शस्तमुशन्ति सन्तः ॥२३॥

निष्कासन, अन्नप्राशन, कर्णवेध, विवाद, युद्ध, यात्रा, खेती और औषधि सम्बन्धी कार्य जन्म-नक्षत्र में नहीं करना चाहिये ॥ २३ ॥

कर्णवेध—

हित्वैतांश्चैत्रपौषावमहरिशयनं जन्ममासं च रिक्तां,
युग्माब्दं जन्मतारामृतुमुनिवसुभिः सम्मिते मास्यथोवा।
जन्माहात् सूर्यभूपैः परिमितदिवसे ज्ञेयशुक्रेन्दुवारे
ऽथौजाब्दे विष्णुयुग्मादितिमृदुलघुभैः कर्णवेधः प्रशस्तः ॥२४॥

चैत्र, पौष, अवम (क्षय) तिथि, चातुर्मास्य, जन्ममास, रिक्ता तिथि, जन्म से समवर्ष और जन्म नक्षत्र को छोड़कर छठें, सातवें आठवें या जन्मदिन से बारहवें अथवा सोलहवें दिन में, बुध, गुरु, शुक्र और चन्द्र वारों में, विषम वर्ष में, श्रवण, धनिष्ठा, पुनर्वसु, मृदु और लघु संज्ञक नक्षत्रों में कर्णवेध शुभ होता है ॥ २४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विशेष—

व्याघातं परिघं वज्रं व्यतीपातोऽथ वैधृतिः ।
गण्डातिगण्डशूलं च विष्कम्भं नव वर्जयेत् ॥ २५ ॥
कर्णवेधे विवाहे च व्रते पुंसवने तथा ॥ २६ ॥

व्याघात, परिघ, वज्र, व्यतीपात, वैधृति, गण्ड, अतिगण्ड, शूल और विष्कम्भ योगों को कर्णवेध, विवाह, व्रतबन्ध और पुंसवन में वर्जित करना चाहिये ॥२५-२६॥

मुण्डन—

चूडा वर्षात् तृतीयात्प्रभवति विषमेऽष्टार्करिक्ताद्यषष्ठी,
पर्वोनाहे विचैत्रोदगयनसमये ज्ञेन्दुशुक्रेज्यकानाम् ।
वारे लग्नांशयोश्चास्वभनिधनतनौ नैधने शुद्धियुक्ते,
शाक्रोपेतैर्विमैत्रैर्मृदुचरलघुभैरायषट्त्रिस्थपापैः ॥ २७ ॥

तृतीय वर्ष से विषम वर्षों में अष्टमी, द्वादशी, रिक्ता, प्रतिपदा, षष्ठी, पर्व दिन, चैत्रमास, लग्नेश या लग्न के नवांशेश के अष्टम भाव स्थिति में और अनुराधा नक्षत्र को छोड़कर उत्तरायण में, बुध, चन्द्र, शुक्र और गुरु वारों में, मृदु, चर और लघु नक्षत्रों में तथा पापग्रह के तृतीय, षष्ठ और एकादश स्थानों में होने पर चूड़ाकर्म शुभ होता है ॥ २७ ॥

विशेष—

ऋतुमत्याः सूतिकायाः सूनोश्चौलादि नाचरेत् ।
ज्येष्ठापत्यस्य न ज्येष्ठे कैश्चिन्मार्गेऽपि नेष्यते ॥ २८ ॥

माता के रजोवती या सद्यः प्रसूता होने पर उसके बालक का चूड़ाकर्म नहीं करना चाहिये। ज्येष्ठ सन्तान का ज्येष्ठ मास में चूड़ाकर्म वर्जित है। किसी आचार्य के मत से मार्गशीर्ष मास में भी चूड़ाकर्म नहीं करना चाहिये ॥ २८ ॥

विद्यारम्भ—

मृगात्करात्च्छ्रुतस्त्रयेऽश्विमूलपूर्विकात्रये,
गुरुद्वयेऽर्कजीववित्सितेऽह्नि षट्शरत्रिके ।
शिवार्कदिग्द्विके तिथौ ध्रुवान्त्यमित्रभे परैः,
शुभैरधीतिरुत्तमा त्रिकोणकेन्द्रगैः स्मृताः ॥ २९ ॥

मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, हस्त, चित्रा, स्वाती, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मूल, तीनों पूर्वा, पुष्य और अश्लेषा नक्षत्रों में, गुरु, शुक्र और बुधवारों में, षष्ठी, पञ्चमी, तृतीया, चतुर्दशी, सप्तमी, दशमी और द्वितीया तिथियों में विद्यारम्भ शुभ होता है। किन्हीं आचार्यों के मत से ध्रुव, रेवती और अनुराधा नक्षत्रों में केन्द्र और त्रिकोण में शुभ ग्रह के होने पर भी विद्यारम्भ शुभ हैं ॥२९॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपनयनकाल—

गर्भाष्टमेऽष्टमे वाब्दे ब्राह्मणस्योपनायनम् ।
राज्ञामेकादशे सैके विशामेके यथाकुलम् ॥ ३० ॥

ब्राह्मण का गर्भ से अष्टम या अष्टम वर्ष में, क्षत्रिय का ग्यारहवें वर्ष में तथा वैश्य का बारहवें वर्ष में अथवा अपने कुल की परम्परा के अनुसार उपनयन करना चाहिये ॥ ३० ॥

उपनयनमुहूर्त्त—

पूर्वाषाढ़हरित्रयेऽश्विमृगभे हस्तत्रये रेवती,
ज्येष्ठापुष्यभगेषु चोत्तरगते भानौ च पक्षे सिते ।
गोमीनौ प्रमदाधनुर्वनचरे शुक्रार्कजीवेन्दुजे,
पञ्चम्यां दशमीत्रये व्रतमिह श्रेष्ठं द्वितीयाद्वयम् ॥ ३१ ॥

पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, अश्विनी, मृगशिरा, हस्त, चित्रा, स्वाती, रेवती, ज्येष्ठा, पुष्य और पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्रों में, उत्तरायण के सूर्य में, शुक्ल पक्ष में, वृष, मीन, कन्या, मेष, सिंह और धनु लग्नों में, शुक्र, रवि, गुरु और बुधवारों में तथा पञ्चमी, दशमी, एकादशी, द्वादशी, द्वितीया और तृतीया तिथियों में उपनयन कर्म श्रेष्ठ होता है ॥ ३१ ॥

उपनयन में वर्ज्य प्रदोष परिभाषा—

अर्कतर्कत्रितिथिषु प्रदोषः स्यात्तदग्रिमैः ।
रात्र्यर्धसार्धप्रहरयाममध्यस्थितैः क्रमात् ॥ ३२ ॥
प्रदोषोऽत्रचतुर्थ्यस्तात्सप्तमी वा त्रयोदशी ।
यामं सार्धञ्च निश्यर्धं ताः स्पृशन्ति यदि क्रमात् ॥ ३३ ॥

द्वादशी के दिन अर्धरात्रि से पूर्व त्रयोदशी, षष्ठी के डेढ़ प्रहर रात्रि से पूर्व सप्तमी तथा तृतीया के एक प्रहर रात्रि से पूर्व चतुर्थी प्रवृत्त हो, तो प्रदोष होता है। यह उपनयन में वर्जित है। व्रतबन्ध में सूर्यास्त से एक प्रहर पहले चतुर्थी, डेढ़ प्रहर पहले सप्तमी अथवा अर्द्धरात्रि से पहले त्रयोदशी लगने से प्रदोष होता है ॥ ३२-३३ ॥

वर्गादि शुद्धि—

अष्टवर्गविशुद्धेषु गुरुशीतांशुभानुषु ।
व्रतोद्वाहौ च कर्त्तव्यौ गोचरे न कदाचन ॥ ३४ ॥

अष्टवर्ग में गुरु, रवि और चन्द्र के शुद्ध होने पर ही उपनयन कर्म श्रेष्ठ है, गोचर से नहीं ॥ ३४ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गलग्रह—

त्रयोदश्यादि चत्वारि सप्तम्यादि दिनत्रयम्।
चतुर्थी चैकतः प्रोक्ता अष्टावेते गलग्रहाः ॥ ३५ ॥

त्रयोदशी, चतुर्दशी, पौर्णमासी, प्रतिपद्, सप्तमी, अष्टमी, नवमी और चतुर्थी तिथियों को गलग्रह कहते हैं ॥ ३५ ॥

उपनयनादि वर्ज्य—

कृष्णे प्रदोषेऽनध्याये शनौ निश्यपराह्णके।
प्राक्सन्ध्यागर्जिते नैष्टो व्रतबन्धो गलग्रहे ॥ ३६ ॥

कृष्णपक्ष, प्रदोष, अनध्याय, शनिवार, रात्रि, अपराह्ण, गलग्रह तथा मेघ गर्जन युक्त प्रथम सन्ध्या में उपनयन नहीं करना चाहिये ॥ ३६ ॥

पुरुष के लिये नवीन वस्त्र धारण—

ब्रह्मानुराधवसुपुष्यविशाखहस्तचित्रोत्तराश्विपवनादितिरेवतीषु।
जन्मर्क्षजीववुधशुक्रदिनोत्सवादौ धार्यं नवं वसनमीश्वरविप्रतुष्ट्यै ॥३७॥

रोहिणी, अनुराधा, धनिष्ठा, पुष्य, विशाखा, हस्त, चित्रा, उत्तरात्रय, अश्विनी, स्वाती, पुनर्वसु और जन्म-नक्षत्र में; गुरु, बुध और शुक्रवारों में तथा उत्सवादि कार्य में ईश्वरादि की तुष्टि के लिये पुरुष को नवीन वस्त्र धारण करना चाहिये ।३७।

स्त्रियों के लिये नवीन वस्त्र धारण—

धनिष्ठा रेवती चैव तथा हस्तादिपञ्चकम्।
अश्विनी गुरुशुक्राणां स्त्रीणां वस्त्रस्य धारणम् ॥ ३८ ॥

धनिष्ठा, रेवती, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा और अश्विनी नक्षत्रों में तथा गुरु और शुक्रवारों में स्त्री को नवीन वस्त्र धारण करना चाहिये ॥ ३८ ॥

औषधि सेवन—

मृदुमूलचरक्षिप्रे व्यार्किभौमदिने शुभे।
द्व्यङ्गलग्नेऽष्टमे शुद्धे सत्तिथौ भेषजं शुभम् ॥ ३९ ॥

मृदु, मूल, चर और क्षिप्र संज्ञक नक्षत्रों में; शनि और मङ्गल के अतिरिक्त दिनों में; शुभ तिथि में तथा द्विस्वभाव राशि के लग्न में शुभग्रह स्थित हो तो औषधि का सेवन श्रेष्ठ होता है ॥ ३९ ॥

सामान्य क्षौरकर्म—

क्षौरे प्राणहरास्त्याज्या मघा मैत्रं च रोहिणी।
उत्तरा कृत्तिका वारा भानुभौमशनैश्चराः ॥ ४० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मघा, अनुराधा, रोहिणी, उत्तरात्रय और कृत्तिका नक्षत्रों तथा रवि, मङ्गल और शनिवारों को छोड़कर शेष तिथियों मे क्षौरकर्म करना चाहिये ॥ ४० ॥

क्षौरकर्म में वर्ज्य—

प्रयाणसमरारम्भे न रात्रौ न च सन्ध्ययोः ।
श्राद्धाहप्रतिपद्रिक्ताव्रताह्नि च न वैधृतौ ॥ ४१ ॥

यात्रा के समय, युद्धारम्भ में, रात्रि, प्रातः और सायं सन्ध्या में, श्राद्ध के दिन, प्रतिपदा और रिक्ता तिथियों में, व्रत तथा वैधृति योग में क्षौर कर्म नहीं करना चाहिये ॥ ४१ ॥

दोष परिहार—

राजकार्यनियुक्तानां नराणां रूपजीविनाम् ।
श्मश्रुरोमनखच्छेदे नास्ति कालविशोधनम् ॥ ४२ ॥

राज कार्य में नियुक्त तथा रूपजीवी नट आदि लोगों को दाढ़ी, मूँछ, नख आदि बनवाने में कालशुद्धि का विचार नहीं करना चाहिये ॥ ४२ ॥

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां मुहूर्त्तप्रकरणाख्य एकादशः ॥

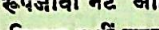

वास्तुप्रकरणम्

भूमि विचार—

शुक्ला विप्रा, क्षत्रिया रक्तभूमिः पीता वैश्या कृष्णवर्णा च शूद्रा ।
या या भूमिर्नेत्रचित्ताभिरामा सा सा ग्राह्या स्वस्ववर्णे विशेषात् ॥ १ ॥

श्वेत वर्ण की विप्र, रक्त वर्ण की क्षत्रिय, पीत वर्ण की वैश्य और कृष्ण वर्ण की भूमि शूद्र संज्ञक होती है।

जिस भूमि को देखकर नेत्र और चित्त में प्रसन्नता हो, वह भूमि वर्ण विशेष से घर बनाने के लिये उपयुक्त होता है ॥ १ ॥

ब्राह्मण आदि वर्णों के लिये शुभ भूमि—

उद्गादिप्लवमिष्टं विप्रादीनां प्रदक्षिणेनैव ।
विप्रः सर्वत्र वसेदनुवर्णमथेष्टमन्येषाम् ॥ २ ॥

उत्तर तरफ ढाल वाली भूमि में ब्राह्मण को, पूर्व की ओर ढाल में क्षत्रियों को, दक्षिण की ओर ढाल भूमि में वैश्यों को और पश्चिम की ओर ढाल भूमि में निवास करना शूद्रों को शुभ होता है ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूमि का शुभाशुभ—

गृहमध्ये हस्तमितं खात्वा परिपूरितं पुनः श्वभ्रम् ।
यद्यूनमनिष्टं तत्समे समं धन्यमधिकं यत् ॥ ३ ॥

गृहकर्त्ता के हाथ से गृहमध्य में एक हाथ लम्बा, एक हाथ चौड़ा और एक हाथ गहरा गड्ढा खोदकर, फिर उस गड्ढे को उसी मिट्टी से भरने पर मिट्टी कम हो जाय तो अशुभ, ठीक हो जाय तो सम और अधिक हो जाय तो शुभ होता है ॥ ३ ॥

शिलान्यास का प्रकार—

उत्तरपूर्वे कोणे कृत्वा पूजां शिलां न्यसेत्प्रथमम् ।
शेषाः प्रदक्षिणेन स्तम्भाश्चैवं समुत्थाप्याः ॥ ४ ॥
छत्रस्रगम्बरयुतः कृतधूपविलेपनः समुत्थाप्यः ।
स्तम्भस्तथैव कार्यो द्वारोच्छ्रायः प्रयत्नेन ॥ ५ ॥

पहले उत्तर पूर्व के कोण अर्थात् ईशान कोण में पूजा करके शिलान्यास करना चाहिये। पश्चात् प्रदक्षिण क्रम से शेष शिलाओं का न्यास करना चाहिये। छत्र, माला, वस्त्र, धूप और चन्दन से विभूषित करके स्तम्भ को खड़ा करे। इसी प्रकार द्वार को भी यत्नपूर्वक खड़ा करना चाहिये ॥ ४–५ ॥

शल्यज्ञान का प्रकार—

अर्द्धनिचितं कृतं वा प्रविशन् स्थपतिर्गृहे निमित्तानि ।
अवलोकयेद्गृहपतिः क्व संस्थितः स्पृशति किञ्चाङ्गम् ॥ ६ ॥
रविदीप्तो यदि शकुनिस्तस्मिन् काले विरौति परुषवरम् ।
संस्पृष्टाङ्गसमानं तस्मिन् देशेऽस्थि निर्देश्यम् ॥ ७ ॥

अर्द्ध निर्मित या सम्पूर्ण निर्मित गृह में प्रवेश करता हुआ, कारीगर आगे कथित चिह्नों को देखे कि गृहस्वामी कहाँ स्थित है और किस अङ्ग को छू रहा है। उस समय दीप्त दिशा में स्थित पक्षीगण कठोर शब्द करते हों, तो जिस स्थान पर गृहपति खड़ा हो, उसके नीचे तथा जिस अङ्ग को गृहपति छू रहा हो, तत्तुल्य अङ्ग की हड्डी कहनी चाहिये ॥ ६–७ ॥

विशेष—उदय काल से एक-एक प्रहर क्रम से पूर्व आदि दिशाओं में सूर्य रहता है। जिस दिशा को सूर्य छोड़ आया हो वह अङ्गारिणी, जिसमें स्थित हो वह दीप्त, जिसमें जाने वाला वह धूमित तथा शेष पाँच दिशाएँ शान्त कहलाती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गृह-निर्माण में मास का शुभाशुभ—

चैत्रे शोककरं गृहादिरचितं स्यान्माधवेऽर्थप्रदं,
ज्येष्ठे मृत्युकरं शुचौ पशुहरं तद्वृद्धिदं श्रावणे।
शून्यं भाद्रपदे त्विषे कलिकरं भृत्यक्षयं कार्त्तिके
धान्यं मार्गसहस्ययोर्दहन भीर्माघे श्रियः फाल्गुने ॥ ८ ॥

चैत्र में गृहारम्भ करने से शोक, वैशाख में करने से धनलाभ, ज्येष्ठ में करने से मृत्यु, आषाढ़ में करने से पशुनाश, श्रावण में करने से पशुवृद्धि, भाद्रपद में करने से दारिद्रय, आश्विन में करने से कलह, कार्त्तिक में करने से भृत्य का नाश, अगहन और पौष में करने से धन-धान्यादि की वृद्धि, माघ में करने से अग्निभय और फाल्गुन में गृहारम्भ करने से धन लाभ होता है ॥ ८ ॥

तिथि शुद्धि—

दारिद्र्यं प्रतिपत्कुर्यात् चतुर्थी धनहारिणी,
अष्टम्युच्चाटनं चैव नवमी शस्त्रघातिनी।
अमायां राजभीतिश्च चतुर्दश्यां स्त्रियः क्षयः
शुक्लपक्षे भवेत्सौख्यं कृष्णे तस्करतो भयम् ॥ ९ ॥

यदि प्रतिपदादि तिथियों में गृहारम्भ किया जाय तो प्रतिपद में दरिद्रता, चतुर्थी में धननाश, अष्टमी में उच्चाटन, नवमी में शस्त्राघात, अमावास्या में राजभीति और चतुर्दशी में स्त्री का नाश होता है। शुक्लपक्ष में गृहारम्भ करने से सुख और कृष्णपक्ष में गृहारम्भ करने से चौरभय होता है ॥ ९ ॥

नक्षत्र की शुद्धि—

त्र्युत्तरेऽपि च रोहिण्यां पुष्ये मैत्रे करद्वये।
धनिष्ठाद्वितये पौष्णे गृहारम्भः प्रशस्यते ॥ १० ॥

तीनों उत्तरा, रोहिणी, पुष्य, अनुराधा, हस्त, चित्रा, धनिष्ठा, शतभिषा और रेवती नक्षत्रों में गृहारम्भ शुभ होता है ॥ १० ॥

गृह-प्रवेश मुहूर्त्त—

सौम्यायने ज्येष्ठतपोऽन्त्यमाधवे यात्रानिवृत्तो नृपतेर्नवे गृहे।
स्याद्वेशनं द्वाःस्थमृदुध्रुवोडुभिर्जन्मर्क्षलग्नोपचयोदये स्थिरे ॥११॥

उत्तरायन, ज्येष्ठ, माघ और वैशाख मासों में, मृदु और ध्रुव संज्ञक नक्षत्रों में, जन्मराशि या लग्न से उपचय या स्थिर लग्न में गृह प्रवेश शुभ होता है ॥११॥

षष्ठ्यष्टमीविष्णुदिनानि रिक्तां विहाय चित्रोत्तररोहिणीञ्च।
मृगान्त्यमैत्रे शनिवित्सितेज्ये निवृत्य गेहं प्रविशेत्प्रयाणात् ॥१२॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

षष्ठी, अष्टमी, द्वादशी और रिक्ता तिथियों तथा चित्रा, उत्तरात्रय, और रोहिणी नक्षत्रों को छोड़कर मृगशिर, रेवती और अनुराधा नक्षत्रों तथा शनि, बुध, शुक्र और गुरुवारों में गृहप्रवेश करना चाहिये ॥ १२ ॥

हलप्रवहण—

मृदुध्रुवक्षिप्रचरेषु मूलमघाविशाखसहितेषु भेषु ।
हलप्रवाहं प्रथमं विदध्यान्नीरोगमुष्कान्वितसौरभेयैः ॥ १३ ॥

मृदु, ध्रुव, क्षिप्र और चर संज्ञक, मूल, मघा और विशाखा नक्षत्रों में प्रथम बार रोग रहित बैल से हल चलवाना शुभ होता है ॥ १३ ॥

बीजवपन—

हस्ताश्विपुष्योत्तररोहिणीषु चित्रानुराधामृगरेवतीषु ।
स्वातीधनिष्ठासु मघासु भेषु बीजोप्तिरुत्कृष्टफला प्रदिष्टा ॥१४॥

हस्त, अश्विनी, पुष्य, तीनों उत्तरा, रोहिणी, चित्रा, अनुराधा, मृगशिर, रेवती, स्वाती, धनिष्ठा और मघा नक्षत्रों में बीज बोने से उत्कृष्ट फसल होती है ॥ १४ ॥

मेधि स्थापन—

वटोदुम्बरनीपानां शाखोटवदरस्य च ।
शाल्मलेर्मुसलेनैव मेधिं कुर्याद्विचक्षणः ॥ १५ ॥
कपित्थबिल्ववंशानां मेधिर्नैव शुभावहा ।
न पौषे न च रिक्तायां न कुजार्किदिने तथा ॥ १६ ॥
मृदुध्रुवचरर्क्षेषु खाते द्रव्यं नियुज्य च ।
सम्पूज्य धान्यं बद्ध्वाऽग्रे मेधिं संस्थापयेद् बुधः ॥ १७ ॥

वट, गूलर, कदम्ब, साहोर, बैर और सेमल की लकड़ी की मेधि श्रेष्ठ तथा खैर, बेल और बाँस की मेधि (मेह) अशुभ होती है। पौष मास, रिक्ता तिथि तथा मङ्गल और शनिवार को छोड़कर मृदु, ध्रुव और चरसंज्ञक नक्षत्रों में खात बनाकर, उसमें कुछ द्रव्य नियोजित कर, पुष्पादि से पूजन करके मेधि के अग्र-भाग में धान्य बाँधकर उसकी स्थापना करना शुभ होता है ॥ १४-१७ ॥

बीजरक्षण—

रोहिणी रेवतीमूलं स्वाती हस्तो मृगस्तथा ।
आषाढोत्तरयुक्ता च तथा भाद्रपदा मघा ॥ १८ ॥
शस्तानि सर्वधान्यानां शुभेवारे स्थिरोदये ।
गर्गादिमुनिभिः प्रोक्ताः प्रशस्ता बीजरक्षणे ॥ १९ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोहिणी, रेवती, मूल, स्वाती, हस्त, मृगशिरा, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा और मघा नक्षत्रों, शुभवारों तथा स्थिर लग्नों में बीज का स्थापन शुभ है, ऐसा गर्गादि मुनियों का मत है ॥ १८-१९ ॥

क्रय-विक्रय—

क्रयः कार्योऽश्विनीस्वातीश्रवश्चित्राशतान्त्यभे ।
विक्रयो भरणीपूर्वात्रयाश्लेषासु मिश्रभे ॥ २० ॥

अश्विनी, स्वाती, श्रवण, चित्रा, शतभिषा और रेवती नक्षत्रों में क्रय करना तथा भरणी, पूर्वाषाढ़ा, पूर्वफाल्गुनी पूर्वभाद्रपदा, अश्लेषा तथा मिश्र संज्ञक नक्षत्रों में विक्रय करना शुभ होता है ॥ २० ॥

सर्वारम्भ मुहूर्त्त—

सुतिथौ शुभनक्षत्रे शुभवारे शुभोदये ।
चन्द्रे त्रिषड्दशायस्थे सर्वारम्भः प्रसिद्ध्यति ॥ २१ ॥

शुभ तिथि, शुभ नक्षत्र, शुभवार और शुभ लग्न में, चन्द्रमा के तीसरे, छठे, दशवें और ग्यारहवें में रहने पर सभी कार्यों का आरम्भ करना शुभ होता है॥२१॥

इति 'हेमपुष्पिका' भाषाटीकायां वास्तुप्रकरणाख्यो द्वादशः ॥

यात्राप्रकरणम्

यात्रागुण—

यात्रावतां वैरिवधेष्टसिद्धिर्यात्रावतामध्ययनादिधर्माः ।
यात्रावतामस्ति सुखार्थलाभो यात्रावतामिप्सितकार्यसिद्धि ॥१॥

यात्रा से शत्रु का वध कर अभीष्ट की सिद्धि, अध्ययन आदि की सिद्धि, सुख और धन की प्राप्ति तथा अभीष्ट कार्य की सिद्धि होती है ॥ ॥ ॥

दिक्शूल—

शनिसोमौ त्यजेत् पूर्वे रविशुक्रौ च पश्चिमे ।
उत्तरे बुधभौमौ च दक्षिणे च बृहस्पतिम् ॥ २ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शनि और सोमवार को पूरब, रवि और शुक्रवार को पश्चिम, बुध और मङ्गलवार को उत्तर तथा गुरुवार को दक्षिण की यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥ २ ॥

चन्द्र विचार—

पृष्ठे चन्द्रे भवेन्मृत्युर्वामे चन्द्रे धनक्षयः ।
दक्षिणे चार्थलाभः स्यात्सम्मुखे सुखसम्पदः ॥ ३ ॥

पृष्ठ चन्द्र में यात्रा करने से मृत्यु, वाम में यात्रा करने से धन का नाश, दक्षिण चन्द्र में यात्रा करने से धन का लाभ और सम्मुख चन्द्र में यात्रा करने से सुख और सम्पत्ति की प्राप्ति होती है ॥ ३ ॥

रवि शुद्धि—

चिरप्रवासयात्रायां गृहे कर्णस्य वेधने ।
चूड़ाकृतौ प्रतिष्ठायां भानुशुद्धिर्विधीयते ॥ ४ ॥

अधिक दिनों तक प्रवास की यात्रा, गृह प्रवेश आदि, कर्णवेध, चूड़ाकर्म तथा देव प्रतिष्ठा में रवि शुद्धि आवश्यक है ॥ ४ ॥

शुभनक्षत्र आदि का फल—

आरोग्यमृक्षेण धनं क्षणेन कार्यस्य सिद्धिस्तिथिना शुभेन ।
राश्युद्गमे नाध्वनि सिद्धिमाहुः प्रायः शुभानि क्षणदाकरेण ॥५॥

यात्रा में नक्षत्र शुद्धि से आरोग्य, मुहूर्त्त से धन लाभ, तिथि शुद्धि से कार्य सिद्धि, राशि शुद्धि से मार्ग में सिद्धि तथा चन्द्र की शुद्धि से सब प्रकार की सिद्धि होती है ॥ ५ ॥

घात नक्षत्र—

मघाकरस्वातीमैत्र मूलश्रुत्यम्बुपान्त्यभम् ।
याम्यत्राह्नेशसार्पं च मेषादेर्घातभं न सत् ॥ ६ ॥

मेष आदि राशि वालों के लिये क्रम से मघा, हस्त, स्वाती, अनुराधा, मूल, श्रवण, उत्तराषाढ़ा, रेवती; भरणी, रोहिणी, आर्द्रा और अश्लेषा घात नक्षत्र होते हैं। इनमें यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥ ६ ॥

घात तिथि—

गोस्त्रीझषे घाततिथिस्तु पूर्णा भद्रा नृयुक्कर्कटकेऽथ नन्दा ।
कौर्प्याजयोर्नक्रघटे च रिक्ता जया धनुःकुम्भहरौ न शस्ताः ॥७॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वृष, कन्या और मीन राशि में पूर्णा; मिथुन और कर्क में नन्दा; तुला, मेष मकर और कुम्भ में रिक्ता तथा धनु, कुम्भ और सिंह में जया घात तिथि संज्ञक हैं। ये यात्रा में वर्ज्य हैं ॥ ७ ॥

घात दिन—

नक्रे भौमो गोहरिस्त्रीषु मन्दश्चन्द्रो द्वन्द्वेऽर्कोऽजभे ज्ञश्च कर्के।
शुक्रः कोदण्डालिमीनेषु कुम्भे जूके जीवो घातवारा न शस्ताः ॥८॥

मकर राशि के लिये मङ्गल; वृष, सिंह और कन्या के लिये शनि; मिथुन के लिये चन्द्र; मेष के लिये रवि; कर्क के लिये बुध; धनु, वृश्चिक और मीन के लिये शुक्र तथा कुम्भ और तुला के लिये गुरु घात वार होते हैं। ये यात्रा में वर्ज्य हैं ॥ ८ ॥

घात लग्न—

भूमिद्व्यब्ध्यद्रिदिक्सूर्याङ्गाष्टाङ्केशाग्निसायकाः।
मेषादि घातलग्नानि यात्रायां वर्जयेत्सुधीः ॥ ९ ॥

मेष राशि वालों के लिये मेष, वृष के लिये वृष, मिथुन के लिये कर्क, कर्क के लिये तुला, सिंह के लिये मकर, कन्या के लिये मीन, तुला के लिये धनु, वृश्चिक के लिये वृश्चिक, धनु के लिये धनु, मकर के लिये कुम्भ, कुम्भ के लिये मिथुन तथा मीन के लिये सिंह घात लग्न होते हैं। ये यात्रा में वर्ज्य हैं ॥ ९ ॥

जन्मस्थ चन्द्र यात्रा में वर्ज्य—

जन्मस्थे च शशाङ्के च पञ्चकर्माणि वर्जयेत्।
यात्रा युद्धं विवाहं च क्षौरं च गृहवेशनम् ॥ १० ॥

यात्रा, युद्ध, विवाह, क्षौर तथा गृहप्रवेश में जन्म का चन्द्रमा वर्ज्य है ॥ १० ॥

वर्ज्य तिथि—

न षष्ठी न च द्वादशी नाष्टमी नो सिताद्या तिथिः पूर्णिमा न रिक्ता ॥११॥

षष्ठी, द्वादशी, अष्टमी, शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, पूर्णिमा और रिक्ता तिथि में यात्रा नहीं करनी चाहिये ॥ ११ ॥

पूर्वादि यात्रा में वर्ज्य तिथ्यादि—

सदा श्रवणशक्रौ च प्रतिपन्नवमी तथा।
शनिसोमौ तथा वर्ज्याः पूर्वाशागमने बुधैः ॥ १२ ॥
पूर्वभाद्रपदाश्विन्यौ पञ्चमी च त्रयोदशी।
गुरुः पञ्चधनिष्ठाद्यास्त्याज्या याम्यदिशागमे ॥ १३ ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रोहिणी च तथा पुष्यः षष्ठी चैव चतुर्दशी ।
शुक्रार्कभौमवाराश्च वर्ज्या पश्चिमदिग्गमे ॥ १४ ॥
द्वितीया दशमी चैव हस्ताश्चोत्तरफाल्गुनी ।
बुधभौमार्कवाराश्च त्याज्या उत्तरदिग्गमे ॥ १५ ॥

श्रवण और ज्येष्ठा नक्षत्र, प्रतिपद और नवमी तिथि तथा शनि और सोमवार पूर्व दिशा की यात्रा में; पूर्वाभाद्रपदा और अश्विनी नक्षत्र, पञ्चमी और त्रयोदशी तिथि, गुरुवार तथा धनिष्ठा आदि पञ्चक दक्षिण दिशा की यात्रा में; रोहिणी और पुष्य नक्षत्र, षष्ठी और चतुर्दशी तिथि तथा शुक्र, रवि और मङ्गलवार पश्चिम दिशा की यात्रा में तथा हस्त और उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र, द्वितीया और दशमी तिथि, तथा रवि, मङ्गल और बुधवार उत्तर दिशा की यात्रा में वर्जित करना चाहिये ॥ १२-१५ ॥

स्पष्ट के लिये चक्र—

दिशा	वर्ज्य नक्षत्र	वर्ज्य तिथि	वर्ज्य दिन
पूर्व	श्रवण, ज्येष्ठा	प्रतिपद, नवमी	शनि, चन्द्र
पश्चिम	रोहिणी, पुष्य	षष्ठी, चतुर्दशी	रवि, शुक्र, मङ्गल
उत्तर	हस्त, उत्तराफाल्गुनी	द्वितीया, दशमी	रवि, मङ्गल, बुध
दक्षिण	अश्विनी, पूर्वभाद्रपदा पञ्चक	पञ्चमी, त्रयोदशी	गुरुवार

सर्वाङ्गज्ञान—

तिथ्यृक्षवारयुतिरद्रिगजाग्नितष्टा
स्थानत्रयेऽत्र वियति प्रथमेऽतिदुःखी ।
मध्ये धनक्षतिरथो चरमे मृतिः स्या-
त्स्थानत्रयेऽङ्कयुजि सौख्यजयौ निरुक्तौ ॥ १६ ॥

शुक्लपक्ष की प्रतिपदा से तिथि संख्या, अश्विन्यादि नक्षत्र संख्या तथा रव्यादि वार संख्या को जोड़कर तीन स्थानों में रखकर क्रम से सात, आठ और तीन का भाग देने से प्रथम स्थान में शून्य आवे तो यात्रा में अत्यन्त कष्ट, द्वितीय स्थान में शून्य आवे तो धन का नाश, तृतीय स्थान में शून्य आवे तो मृत्यु और तीनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थानों में शून्य न आकर कोई अङ्क आवे, तो सुख और विजय की प्राप्ति होती है ॥ १६ ॥

सहगमन निषेध—

पितापुत्रौ न गच्छेतां न गच्छेत्सहजद्वयम् ।
नवस्त्रीभिर्न गन्तव्यं न गच्छेद् ब्राह्मणत्रयम् ॥ १७ ॥

पिता और पुत्र, दो सहोदर भाई, नौ स्त्रियाँ और तीन ब्राह्मण एक साथ यात्रा न करे ॥ १७ ॥

सम्मुख शुक्र निषेध—

उदेति यस्यां दिशि यत्र याति गोलभ्रमाद्वाथ ककुब्भसंस्थे ।
त्रिधोच्यते सम्मुख एव शुक्रो यत्रोदितस्तां तु दिशं न यायात् ॥१८॥

सम्मुख शुक्र तीन प्रकार का होता है। जिस किसी दिशा में शुक्र उदय हो वह प्रथम, उत्तर या दक्षिण गोल भ्रमण से जिस दिशा में शुक्र जाय वह द्वितीय तथा कृत्तिका आदि नक्षत्रों के वश शुक्र जाय तो वह तृतीय प्रकार होता है। इस प्रकार शुक्र के उदयादि दिशाओं में यात्रा करने से वह सम्मुख शुक्र होता है ॥१८॥

सामान्य-यात्रा मुहूर्त्त—

सार्पार्द्रोत्तरकृत्तिकायममघास्त्याज्या विशाखायुताः,
शस्ताः पुष्यकरादितीन्दुतुरगा मित्रत्रयं रेवती ।
भान्यन्यानि च मध्यमानि गमने षष्ठीयुतां द्वादशीम् ,
रिक्तं पर्व च वर्जयेज्झषतुलास्त्रीमन्मथाः शोभनाः ॥ १९ ॥

अश्लेषा, आर्द्रा, उत्तरात्रय, कृत्तिका, भरणी, मघा और विशाखा नक्षत्रों में यात्रा नहीं करनी चाहिये। पुष्य, हस्त, पुनर्वसु, मृगशिरा, अश्विनी, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल और रेवती नक्षत्र यात्रा में श्रेष्ठ तथा शेष मध्यम होते हैं। षष्ठी, द्वादशी, रिक्ता तथा पर्व तिथियों के अतिरिक्त शेष तिथियों तथा मीन, तुला, कन्या और मिथुन लग्नों में यात्रा करना श्रेष्ठ है ॥ १९ ॥

मुहूर्त्त विशेष—

स्वात्यन्तकाहिवसुपौष्णकरानुराधा-
दित्यध्रुवाणि विषमास्तिथयोऽकुलाः स्युः ।
सूर्येन्दुमन्दगुरवश्च कुलाकुलो ज्ञो,
मूलाम्बुपेशविधिभं दशषड्द्वितिथ्यः ॥ २० ॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वाश्वीज्यमघेन्दुकर्णदहनद्विशेन्द्रचित्रास्तथा,
शुक्रारौ कुलसंज्ञकाश्च तिथयोऽर्काष्टेन्द्रवेदैर्मिताः ।
यायी स्यादकुले जयी च समरे स्थायी च तद्वत्कुले,
सन्धिः स्यादुभयोः कुलाकुलगणे भूमीशयोर्युध्यतो. ।।२१।।

स्वाती, भरणी, अश्लेषा, धनिष्ठा, रेवती, हस्त; अनुराधा, पुनर्वसु और ध्रुव संज्ञक नक्षत्र, विषम तिथि तथा रवि, चन्द्र, शनि और गुरुवार अकुल संज्ञक; शतभिषा, आर्द्रा और अभिजित् नक्षत्र, दशमी, षष्ठी और द्वितीया तिथि तथा बुधवार, कुलाकुल संज्ञक तथा पूर्वात्रय, अश्विनी, पुष्य, मघा, मृगशिरा, श्रवण, कृत्तिका, विशाखा, ज्येष्ठा और चित्रा नक्षत्र, द्वादशी, अष्टमी, चतुर्दशी और चतुर्थी तिथि तथा शुक्र और मङ्गल वार कुल संज्ञक होते हैं ।

विवाद आदि में अकुल संज्ञक में यात्रा करने से यायी (मुद्दई) की जय, कुल संज्ञक में स्थायी (मुद्दालह) की जय तथा कुलाकुल संज्ञक में यायी और स्थायी में सन्धि होती है ॥ २०–२१ ॥

॥ इति 'हेमपुष्पिका'–भाषाटीकायां यात्राप्रकरणाख्यो त्रयोदशः ॥

इति 'दरभङ्गा' मण्डलान्तर्गत 'जरिसो' ग्रामनिवासि–ज्यौतिषाचार्य–पोष्टाचार्य–साहित्याचार्यादि–पदवीक–प्राप्त–स्वर्गीय पण्डित श्री अच्युतानन्द झा शर्मात्मज–श्री श्यामदेव झा शर्मणा विरचिता–बृहद्दवकहडाचक्र–'हेमपुष्पिका'–हिन्दीभाषाटीका समाप्ता ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अ.मा.मा. दयानिधि
2-1/22 01850/0

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh